कृषि मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत कृषि अखबार

Registered Postal Regn. No.MP/Bhopal/4-150/2023-25 RNI No.-CHHHIN/2002/10910, डाक प्रेषण का दिन - मंगलवार, बुधवार

कृषक जगत

राष्ट्रीय कृषि अखबार

भोपाल-जयपुर-रायपुर

ISSN -0970-8650

संस्थापित 1946 रायपुर, प्रकाशन - सोमवार 8 दिसम्बर 2025 वर्ष-24 अंक - 14 मूल्य रु. 12/- कुल पृष्ठ - 12 www.krishakjagat.org पृष्ठ - 1

कृषक जगत न्यूज़ वेबसाइट पर जाने के लिए QR कोड स्कैन करें

श्रेष्ठ कृषि पत्रकारिता के लिए भाकृअनुप ICAR चौधरी चरणसिंह अवार्ड से पुरस्कृत

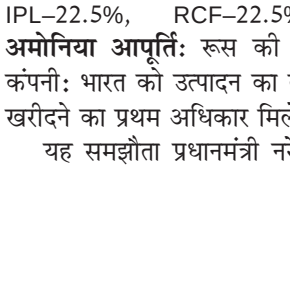

अंदर पढ़िये...

5

कीटनाशकों के प्रयोग में सावधानियां

प्रदेश में धान खरीदी का महाअभियान जारी

अब तक 22 लाख मीट्रिक टन से अधिक हुई धान खरीदी

- 4.39 लाख से अधिक किसानों ने बेचा धान
- धान खरीदी में किसानों को 5277 करोड़ का भुगतान
- इस वर्ष 27.30 लाख किसान पंजीकृत
- 'टोकन तुंहर एप' से किसानों को मिल रही है सहुलियत

रायपुर। राज्य में समर्थन मूल्य पर धान खरीदी का सिलसिला तेजी के साथ जारी है। पिछले माह के 14 नवंबर से शुरू हुए धान खरीदी महाअभियान में जारी रिपोर्ट के अनुसार 22 लाख 39 हजार 433 लाख मीट्रिक टन से अधिक की धान की खरीदी हो चुकी है। अब तक 4 लाख 39 हजार 511 पंजीकृत किसानों ने धान बेचा है। धान खरीदी के एवज में किसानों को बैंक लिंकिंग व्यवस्था के तहत भुगतान हेतु मार्कफेड द्वारा 5277 करोड़ रूपए जारी किए गए है। चालू खरीफ सीजन के लिए इस वर्ष 27 लाख 30 हजार 96 किसानों ने पंजीयन कराया है, जिसमें 31 लाख 51 हजार 771 हेक्टेयर रकबा शामिल है।

राज्य में सभी जिलों में धान खरीदी जारी है। धान खरीदी से अब तक महासमुंद जिला सर्वाधिक 15 लाख 19 हजार 650 क्विंटल धान खरीदकर पहले पायदान पर है। वहीं गरियाबंद जिले 6 लाख 73 हजार 495 क्विंटल धान खरीदकार दूसरे नम्बर पर है। इसी तरह बिलासपुर जिले 6 लाख 73 हजार 65 क्विंटल धान खरीदकर तीसरे स्थान हासिल की है।

हांलाकि कांकेर जिला 6 लाख 15 हजार 431 क्विंटल धान खरीदी कर चौथे पायदान पर बने हुए है। पांच लाख क्विंटल से अधिक धान खरीदी वाले जिले में धमतरी और मुंगेली जिले शामिल हैं,

(शेष पृष्ठ 3 पर)

भारत - रूस कृषि एवं उर्वरक सहयोग को नई गति

20 लाख टन यूरिया संयंत्र के समझौते से मजबूत साझेदारी

नई दिल्ली (कृषक जगत)। भारत और रूस के बीच कृषि एवं उर्वरक क्षेत्र में सहयोग को नई मजबूती मिली है। **केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान और रूस की कृषि मंत्री सुश्री ओक्साना लुट** के बीच गत 4 दिसंबर को नई दिल्ली में हुई द्विपक्षीय बैठक में कृषि व्यापार, अनुसंधान, बीज, उर्वरक और बाजार पहुंच के क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने पर सहमति बनी।

रूस में 20 लाख टन/वर्ष क्षमता का यूरिया संयंत्र: बड़ा निवेश

द्विपक्षीय सहयोग को नई दिशा देते हुए रूस की यूरालकेम ने भारत की आईपीएल, आरसीएफ और एनएफएल के साथ रूस में 20 लाख टन वार्षिक क्षमता का यूरिया प्लांट स्थापित करने के लिए समझौता किया है।

कुल निवेश: 1.2 अरब डॉलर (लगभग रू. 10,790 करोड़), **प्लांट शुरू होने की संभावित अवधि:** 2027-28, **भागीदारी:** यूरालकेम 50%, IPL-22.5%, RCF-22.5%, NFL-5%, **अमोनिया आपूर्ति:** रूस की टोग्लियाटीआज़ोट कंपनी: भारत को उत्पादन का कम से कम 50% खरीदने का प्रथम अधिकार मिलेगा।

यह समझौता प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन, भारत में रूस के राजदूत डेनिस अलीपोव और रूस में भारत के राजदूत विनय कुमार की उपस्थिति में हुआ।

कृषि अनुसंधान में साझेदारी

बैठक में आईसीएआर और रूस के फेडरल सेंटर फॉर एनिमल हेल्थ के बीच कृषि अनुसंधान, नवाचार और क्षमता निर्माण को बढ़ावा देने के लिए एमओयू पर हस्ताक्षर हुए।

कृषि व्यापार और बीज-बागवानी निर्यात पर जोर: दोनों देशों ने कृषि व्यापार को संतुलित बनाने, भारतीय आलू, अनार और बीजों के निर्यात और खाद्यान्न व बागवानी उत्पादों के लिए नए बाजार अवसर विकसित करने पर सहमति जताई।

रणनीतिक साझेदारी का विस्तार: यूरालकेम के सीईओ दिमित्री कोन्याएव ने भारत को उर्वरकों का प्रमुख वैश्विक बाजार बताते हुए दीर्घकालिक सहयोग को मजबूत करने की प्रतिबद्धता जताई।

कुल मिलाकर, भारत-रूस की यह श्रृंखलाबद्ध पहलें कृषि व्यापार, उर्वरक आपूर्ति, वैज्ञानिक अनुसंधान और आर्थिक साझेदारी को नई गति देने वाली साबित होंगी, जिससे दोनों देशों के किसानों और कृषि अर्थव्यवस्था को प्रत्यक्ष लाभ मिलेगा।

सर्वोत्तम गुणवत्तावाली जैन ड्रिप की विस्तृत उत्पादन श्रृंखला - सभी फसलों # के लिए हर किसान के बजट के अनुरूप विभिन्न प्रकार के ड्रिप सिचाई व्यवस्था के विकल्प स्टॉक में उपलब्ध हैं।

(# दलहन, धान, तिलहन, सब्जियाँ एवं फल बागानें आदि के लिए)

जैन टर्बो स्लिम - टीई व सुपर सेव्हर
5 से 20 मील (0.13 से 0.5 मिमी)
साईज - 12, 16, 20 मिमी

जैन टर्बो एक्सेल प्लस
0.4 मिमी, क्लास 1 एचडी व क्लास 2
साईज - 12, 16, 20 मिमी

जैन टर्बो लाईन सुपर
0.4 मिमी, क्लास 1 एचडी व क्लास 2
साईज - 12, 16, 20 मिमी साईज

जैन टर्बो लाईन - पीसी
क्लास २
साईज - १६, २० मिमी

जैन टर्बो टॉप - एचडी पीसी
१३, १५ मील (०.33, ०.38 मिमी) - क्लास 1 व 2
साईज - 12, 16, 20 मिमी

जैन पॉलीट्यूब एवं ड्रिपर्स
साईज - 12, 16, 20, 25, 32 मिमी

नोट : ड्रिपर्स व ड्रिपलाईन अलग-अलग प्रेशर रेटींग में उपलब्ध

जैन ड्रिप® प्रति बूँद, फसल भरपूर!®

जैन इरिगेशन सिस्टम्स लि. छोटे छोटे कदम. आसमान छूने का दम!®

दूरभाष: 0257-2258011; 6600800
टोल फ्री : 1800 599 5000
ई-मेल: jisl@jains.com; **वेबसाईट:** www.jains.com

ड्रिपलाईन व फिटींग्ज | ड्रिपर्स | रेनपोर्ट स्प्रिंकलर | स्प्रे हेड व जेटस् | वॉल्व | फिल्टर्स | फिल्ट्रेशन संसाधन | फर्टिगेशन संसाधन | पीव्हीसी पाईप व फिटींग्ज | एचडीपीई पाईप्स व फिटींग्ज | क्विक कनेक्ट पाइप | ऑटोमेशन व कन्ट्रोलर्स

सावधान! नकल करके ड्रिप बनाने वाले एवं नकली ड्रिप कंपनियों और वितरकों से सतर्क रहें!

केंद्रीय कृषि मंत्री ने दिल्ली में किया सरस आजीविका फूड फेस्टिवल का शुभारंभ

लखपति दीदियों के पास अनंत शक्तियों का भंडार : श्री चौहान

नई दिल्ली (कृषक जगत)। केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने नई दिल्ली स्थित सुंदर नर्सरी, भारत स्काउट्स एंड गाइड्स मार्ग, निजामुद्दीन पर आयोजित सरस आजीविका फूड फेस्टिवल 2025 का शुभारंभ किया। इस अवसर पर केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती अन्नपूर्णा देवी भी उपस्थित थीं। इस मौके पर श्री चौहान ने कहा- सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके। शरण्ये त्रयम्बके गौरी नारायणी नमोस्तुते, मेरे लिए नारायणी हर नारी है, 'नारी तू नारायणी'। शिवराज सिंह ने कहा है कि लखपति बहनों ने तो यह सिद्ध कर दिया है कि वो अनंत शक्तियों की भंडार हैं, सचमुच में बहनों ने अपनी कर्मठता से प्रगति, विकास और समृद्धि की एक नई गाथा लिखी है। आज लखपति दीदियां 25 राज्यों से आई हैं और उनमें से कई दीदियां ऐसी हैं, जो अपने गुणों, मेहनत और परिश्रम की वजह से आज पूरे देश को रास्ता दिखा रही हैं।

फूड फेस्टिवल में 25 राज्यों से आई महिलाएं 62 स्टॉलों के माध्यम से 500 से अधिक पारंपरिक और स्वादिष्ट व्यंजन परोस रही हैं। फेस्टिवल में हरियाणा, अरुणाचल प्रदेश, महाराष्ट्र, केरल, असम, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, गोवा, गुजरात सहित कई राज्यों की भागीदारी से देश की सांस्कृतिक और सामाजिक विविधता की झलक मिल रही है। फेस्टिवल ग्रामीण भारत की समृद्ध परंपराओं, आत्मनिर्भरता और महिला नेतृत्व वाली आजीविका मॉडल को सामने लाने वाला प्रभावी माध्यम बन गया है।

किसान ऑफ़ इंडिया सम्मान 2025

नवाचार, टिकाऊ खेती और नए दौर की कृषि को मिला मंच

नई दिल्ली (कृषक जगत)। राष्ट्रीय राजधानी में आयोजित किसान ऑफ़ इंडिया सम्मान 2025 के पहले संस्करण में देशभर के प्रगतिशील किसानों, कृषि नवाचारों और नई तकनीकों को एक साझा मंच मिला। कार्यक्रम में टिकाऊ खेती, आधुनिक तकनीक और ग्रामीण उद्यमिता के प्रभावी उदाहरण सामने आए।

जोधपुर, राजस्थान के उद्यमी अमित सोनी ने साझा किया कि किस तरह उनके मिलेट-आधारित बेकरी उत्पादों को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिली। उनका बाजरे का चॉकलेट ट्रफल केक संसद में कटा और प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा सराहा गया। वर्मीकम्पोस्टिंग को लेकर लोकप्रिय हुई सना खान, जिनकी पहल का उल्लेख प्रधानमंत्री ने मन की बात में किया था, ने युवाओं से कृषि अपनाने और आधुनिक तकनीकों का उपयोग करने का आग्रह किया। जयपुर के प्रगतिशील किसान खेमा राम चौधरी, जिन्होंने सूखी भूमि पर हाइड्रोपोनिक NFT सिस्टम और पॉलीहाउस खेती को अपनाया है, सात सम्मानित किसानों में से एक थे।

डॉ. मांगी लाल जाट, सचिव, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग (DARE) और महानिदेशक, ICAR, ने वीडियो संदेश में कहा कि ये किसान भारत की कृषि के लिए नए मार्गदर्शक बन रहे हैं।

डॉ. राजर्षि रॉय बर्मन, अतिरिक्त महानिदेशक (कृषि प्रसार), ICAR ने पुरस्कार प्रदान किए और कहा कि 'किसान सबसे बड़ा शोधकर्ता है, जो हर दिन मिट्टी पर प्रयोग करता है।'

उद्घाटन सत्र में श्री अनिल धस्माना, पूर्व सचिव, R&AW और पूर्व अध्यक्ष, NTRO, ने कहा कि दूरदराज़ के किसानों को नई तकनीकों से जोड़ने की आवश्यकता है। श्री विनोद मिश्रा, कंट्री मैनेजर, UNOPS, ने कहा कि 'मिलेट खेती भारत में अगली बड़ी कृषि क्रांति बन सकती है।'

किसान ऑफ़ इंडिया द्वारा आयोजित पुरस्कार समारोह सात श्रेणियों-जैविक/प्राकृतिक, संरक्षित खेती, फूड प्रोसेसिंग, कृषि स्टार्ट-अप, डेयरी, मत्स्य पालन और नई कृषि तकनीक में उत्कृष्ट कार्य करने वाले किसानों को सम्मानित करता है। जूरी में कृषि और मीडिया क्षेत्र के वरिष्ठ विशेषज्ञ पद्मश्री किसान सेठपाल सिंह, डॉ. शैलेन्द्र राजन, प्रो. ए. पी. राव और पत्रप्रवर्तक प्रताप सोमवंशी शामिल थे।

यूएन विश्व मृदा दिवस 2025

स्वस्थ शहरों की नींव - स्वस्थ मिट्टी

विश्व मृदा दिवस हमें हर वर्ष यह संदेश देता है कि मिट्टी सिर्फ खेतों की नहीं, बल्कि जीवन की भी बुनियाद है। इस वर्ष की थीम 'स्वस्थ शहरों के लिए स्वस्थ मिट्टी' इसी बात पर जोर देती है कि ग्रामीण माटी की गुणवत्ता ही शहरों के भोजन, पेयजल और पर्यावरण को सुरक्षित रखने में सबसे बड़ी भूमिका निभाती है।

शहर चाहे जितने आधुनिक हों, उनकी खाद्य सुरक्षा का आधार अंततः वही मिट्टी है जो छोटे किसानों और हमारे खाद्य तंत्र को पोषित करती है।

शुष्क क्षेत्रों की मिट्टी पर बढ़ता दबाव

एशिया और अफ्रीका के शुष्क अंचलों में मिट्टी का स्वास्थ्य किसानों के लिए पहली सुरक्षा ढाल है। मिट्टी स्वस्थ रहे तभी फसल टिकेगी, और किसान परिवार भी। लेकिन बदलते मौसम, बेतरतीब भूमि उपयोग, पोषक तत्वों की कमी और मिट्टी की सघनता जैसी समस्याएँ मिट्टी को तेजी से कमजोर कर रही हैं।

CGIAR प्रणाली का हिस्सा होने के नाते ICRISAT का उद्देश्य विज्ञान और तकनीक के माध्यम से इन चुनौतियों का समाधान देना है, ताकि मिट्टी की सेहत बहाल हो और किसान मजबूत बनें।

तेलंगाना की मिसाल: चलित मिट्टी परीक्षण प्रयोगशाला

ICRISAT का मानना है कि मिट्टी की जानकारी तभी उपयोगी है जब वह किसान तक आसानी से पहुँचे। तेलंगाना में इसी सोच के साथ राज्य की पहली मोबाइल स्वॉइल हेल्थ टेस्टिंग बस बनाई गई। लॉरस चैरिटेबल ट्रस्ट के सहयोग से शुरू हुई यह पहल गाँव-गाँव जाकर किसानों की मिट्टी जाँच रही है। अब तक इस बस ने 22 गाँवों में जाकर 2,400 से अधिक मिट्टी नमूनों की जांच की और किसानों को व्यक्तिगत मृदा स्वास्थ्य कार्ड प्रदान किए हैं। किसान अब अपने खेत की जरूरत के अनुसार उर्वरक का चुनाव कर पा रहे हैं, जिससे लागत कम हो रही है और उत्पादन क्षमता बढ़ रही है।

यह मॉडल अन्य राज्यों के लिए भी सरल और प्रभावी समाधान बन सकता है।

इसके साथ ही 1,500 से अधिक विद्यार्थियों ने इस मोबाइल लैब के माध्यम से मिट्टी विज्ञान को practically समझा है-जो भविष्य में कृषि और पर्यावरण संरक्षण की दिशा में अधिक संवेदनशील नागरिक बनेंगे।

अफ्रीका में मिट्टी संरक्षण के नए कदम

अफ्रीका में भी ICRISAT के साझेदारी-आधारित कार्य से मिट्टी की सेहत सुधारने की पहल को नया बल मिला है। नाइजर में सुधारित ज्वार-बाजरा किस्मों, माइक्रोडोज़ उर्वरक तकनीक और प्राकृतिक पुनर्जनन से किसानों की उपज दोगुनी तक पहुँची है। केन्या के जलवायु-स्मार्ट गाँवों में ज़ै पिट, कम्पोस्टिंग और फसल अवशेष प्रबंधन ने बंजर भूमि को फिर उपजाऊ बनाया है।

मलावी और तंजानिया में जैविक खाद के साथ सटीक उर्वरक उपयोग ने पोषक कमी दूर करने में मदद की और लागत भी नियंत्रण में रखी। ये उदाहरण बताते हैं कि अफ्रीका और भारत दोनों ही शुष्क क्षेत्रों में मिट्टी की क्षमता को फिर से उभारने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बढ़ा रहे हैं।

मिट्टी सघनता: एक छुपा हुआ खतरा

मिट्टी की सघनता (Compaction) एक ऐसी समस्या है जिसे अक्सर अनदेखा कर दिया जाता है। इसी मुद्दे पर ICRISAT और फ्रांस के IRD द्वारा आयोजित CompacSol कार्यशाला में आठ संस्थानों के वैज्ञानिक एकत्र हुए।

सघन मिट्टी में पानी नहीं उतरता, जड़ें नहीं बढ़ पातीं और फसल कमजोर होती है।

यह समस्या आजकल शहरों के आसपास भी बढ़ रही है—भारी निर्माण, वाहन दबाव और अव्यवस्थित विकास के कारण मिट्टी की ऊपरी परतें क्षतिग्रस्त हो रही हैं। इससे पेड़ों की वृद्धि, भूजल पुनर्भरण और तापमान संतुलन प्रभावित होता है।

CompacSol कार्यक्रम के माध्यम से ICRISAT सघनता मापने के मानक विकसित कर रहा है, डेटा साझा प्रणाली बना रहा है और ग्लोबल स्वॉइल लैब नेटवर्क के साथ मिलकर वैज्ञानिक क्षमता बढ़ा रहा है।

बेहतर आंकड़े ही बेहतर निर्णयों की कुंजी हैं।

नवाचार और प्रशिक्षण के माध्यम से भविष्य निर्माण

मिट्टी संरक्षण तभी संभव है जब लोग और संस्थान उसके उपयोग और प्रबंधन को समझें।

ICRISAT की ड्राईलैंड अकादमी द्वारा संचालित ITEC प्रशिक्षण विकासशील देशों के तकनीकी विशेषज्ञों को टिकाऊ कृषि से जुड़े कौशल देता है।

नया स्थापित ICRISAT Centre of E&cellence for South-South Cooperation (ISSCA) नीति-निर्माताओं को प्रमाण-आधारित समाधान उपलब्ध करा रहा है, जिससे वे अपने देशों में मृदा प्रबंधन की प्रभावी रणनीतियाँ लागू कर सकें।

युवाओं और किसानों की बेहतर समझ के लिए ICRISAT ने MRIDA नामक शिक्षण गेम ऐप विकसित किया है, जिसमें खिलाड़ी मिट्टी पर अलग-अलग कृषि फैसलों का प्रभाव सरल तरीके से समझ सकते हैं।

मिट्टी बचेगी तो भविष्य बचेगा

ICRISAT का पूरा कार्य एक ही संदेश देता है—

स्वस्थ मिट्टी से ही मजबूत गाँव बनते हैं, और मजबूत गाँव ही स्वस्थ शहरों की नींव रखते हैं। विश्व मृदा दिवस 2025 के अवसर पर ICRISAT सरकारों, विकास साझेदारों और किसानों से अपील करता है कि वे मिट्टी संरक्षण को प्राथमिकता दें और इसके लिए संयुक्त प्रयास करें। CGIAR का हिस्सा होने के नाते ICRISAT शुष्क क्षेत्रों की मिट्टी को पुनर्जीवित करने की दिशा में लगातार प्रयासरत है। मिट्टी की रक्षा का अर्थ है जीवन की रक्षा।

— डॉ. हिमांशु पाठक, महानिदेशक, ICRISAT

छत्तीसगढ़ में भी 'प्रेशर इरिगेशन नेटवर्क' तकनीक का उपयोग किया जाएगा : श्री साय

मुख्यमंत्री ने मध्यप्रदेश में नई सिंचाई तकनीक की प्रस्तुति का अवलोकन किया

रायपुर। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय को मध्यप्रदेश के जल संसाधन विभाग के अपर मुख्य सचिव श्री राजेश राजौरा ने भोपाल में सिंचाई की नवीनतम तकनीक PIN (Pressure Irrigation Network) के संबंध में विस्तृत प्रेजेंटेशन दिया। उन्होंने बताया कि पारंपरिक सिंचाई पद्धतियों की तुलना में यह प्रणाली कहीं अधिक कुशल, आधुनिक और जल संरक्षण के अनुरूप है।

अपर मुख्य सचिव ने प्रस्तुति के दौरान बताया कि जहाँ पारंपरिक नहर आधारित सिंचाई में लगभग 35 प्रतिशत एफिशिएंसी प्राप्त होती है, वहीं प्रेशर इरिगेशन प्रणाली में दक्षता बढ़कर 65 प्रतिशत तक पहुँच जाती है। इस तकनीक में प्रेशर आधारित पाइपलाइनों से सिंचाई की जाती है, जिससे पानी का रिसाव और अपव्यय कम होता है तथा बिजली की बचत होती है। उन्होंने यह भी बताया कि इस प्रणाली में भू-अधिग्रहण की आवश्यकता न्यूनतम होती है, जिससे परियोजनाएं समय पर और लागत प्रभावी तरीके से पूरी

की जा सकती है।

प्रस्तुति में उल्लेख किया गया कि मध्यप्रदेश में 13 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में इस तकनीक से सिंचाई की जा रही है और आगामी वर्षों में इसे 40 लाख हेक्टेयर तक विस्तारित करने का लक्ष्य है। इस मॉडल से न केवल जल उपयोग दक्षता बढ़ी है, बल्कि किसानों की उत्पादकता और सिंचाई सुविधा में भी महत्वपूर्ण सुधार देखने को मिला है।

मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने प्रेजेंटेशन की सराहना करते हुए कहा कि सिंचाई की यह उन्नत तकनीक जल प्रबंधन की वर्तमान और भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप है। उन्होंने कहा, 'हम इस तकनीक का छत्तीसगढ़ में भी अधिकतम उपयोग सुनिश्चित करेंगे, ताकि राज्य के किसानों को कम पानी में अधिक सिंचाई सुविधा और बेहतर उत्पादन मिल सके। जल संरक्षण, ऊर्जा बचत और त्वरित क्रियान्वयन के दृष्टिकोण से यह तकनीक अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगी। इस तकनीक के माध्यम से भूमि अधिग्रहण किए बिना भी सिंचाई का लाभ मिल सकेगा।' मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने विभागीय अधिकारियों को इस तकनीक के अध्ययन, परीक्षण और चरणबद्ध क्रियान्वयन के लिए दिशा-निर्देश दिए।

इस अवसर पर छत्तीसगढ़ में मुख्यमंत्री के प्रमुख सचिव श्री सुबोध सिंह, मध्यप्रदेश जल संसाधन विभाग के प्रमुख अभियंता श्री विनोद देवड़ा, अधीक्षण यंत्री श्री विकास राजोरिया और अधीक्षण यंत्री श्री शुभंकर विश्वास भी उपस्थित थे।

उल्लेखनीय है कि PIN प्रणाली में सिंचाई पूरी तरह पाइपलाइन आधारित होने के कारण नहर निर्माण की आवश्यकता कम हो जाती है और भू-अधिग्रहण भी न्यूनतम होता है। इससे परियोजनाओं की लागत घटती है और कार्य समय पर पूरे होते हैं। पारंपरिक सिंचाई की तुलना में इस तकनीक में पंपिंग दक्षता अधिक होती है, जिससे बिजली की उल्लेखनीय बचत होती है।

प्रधानमंत्री की हर गारंटी को पूरा कर रही है छत्तीसगढ़ सरकार

मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने बलौदाबाजार-भाटापारा जिले के ग्राम सुहेला में आयोजित कार्यक्रम में 195.26 करोड़ रुपये के विकास कार्यों की सौगात दी। उन्होंने प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) के 1073 हितग्राहियों को आवास की चाबी, प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के तीन हजार महिलाओं को गैस कनेक्शन, प्रधानमंत्री स्वामित्व योजना के पाँच हजार किसानों को अधिकार अभिलेख तथा विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत हितग्राहियों को सामग्री और राशि के चेक प्रदान किए।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश में 3,100 रुपये प्रति क्विंटल की दर से प्रति एकड़ 21 क्विंटल धान खरीदी हो रही है। तेंदूपत्ता संग्रहण की दर बढ़ाकर प्रति मानक बोरा 5,500 रुपये कर दी गई है। किसानों को दो वर्ष का बकाया बोनस भी प्रदान किया जा चुका है। महतारी वंदन योजना और प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना का लाभ बड़ी संख्या में महिलाओं को मिल रहा है।

रबी फसलों के लिए फसल बीमा पोर्टल प्रारंभ

अंतिम तिथि 31 दिसंबर 2025

रायपुर। छत्तीसगढ़ शासन ने रबी मौसम 2025-26 के लिए प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना का पोर्टल चालू कर दिया है। यह योजना किसानों को प्रतिकूल मौसम, सूखा, बाढ़, जलभराव, कीट-व्याधि और ओलावृष्टि जैसी प्राकृतिक आपदाओं से होने वाले नुकसान की भरपाई के लिए सुरक्षा कवच प्रदान करती है। पिछले वर्ष रबी सीजन में फसल कटाई प्रयोगों के आधार पर जिले के 28,037 किसानों को 48 करोड़ 62 लाख रुपये की दावा राशि का भुगतान किया गया था। इस वर्ष जिले के 420 से अधिक अधिसूचित ग्रामों के किसान अपनी रबी फसलों का बीमा करवा सकते हैं। बीमा कराने की अंतिम तिथि 31 दिसंबर 2025 तय की गई है।

इस बार गेहूं सिंचित, गेहूं असिंचित, चना, अलसी और सरसों जैसी अधिसूचित फसलों का बीमा किया जा सकेगा। योजना में ऋणी, अऋणी, भू-धारक और बटाईदार सभी प्रकार के किसान शामिल हो सकते हैं। अधिसूचित ग्रामों में अधिसूचित फसल बोने वाला हर इच्छुक किसान इस योजना का लाभ उठा सकता है।

प्रीमियम दरों के अनुसार किसानों को प्रति हेक्टेयर गेहूं सिंचित के लिए 690 रुपये, गेहूं असिंचित के लिए 405 रुपये, चना के लिए 645 रुपये, अलसी के लिए 315 रुपये और सरसों के लिए 375 रुपये जमा करने होंगे। किसान अपने निकटतम बैंक शाखा, ग्रामीण बैंक, जिला सहकारी केंद्रीय बैंक, सेवा सहकारी समिति, लोक सेवा केंद्र या भारत सरकार के बीमा पोर्टल के माध्यम से फसल बीमा करा सकते हैं। प्रशासन ने किसानों से अपील करते हुए कहा है कि अंतिम तिथि से पूर्व अपनी फसलों का बीमा अवश्य कराएं ताकि किसी भी प्राकृतिक आपदा की स्थिति में उन्हें आर्थिक सुरक्षा प्राप्त हो सके। योजना से संबंधित अधिक जानकारी के लिए किसान कृषि, राजस्व, बैंक या बीमा कंपनी के अधिकारियों से संपर्क कर सकते हैं।

अब तक 22 लाख मीट्रिक टन... (पृष्ठ 1 का शेष)

वहीं चार लाख क्विंटल से अधिक खरीदी वाले जिले सूरजपुर, बलौदाबाजार-भाटापारा, बेमेंतरा, बालोद और कोण्डागांव शामिल हैं। किसानों को अब तक 8 लाख 97 हजार 779 टोकन जारी किए गए हैं। गौरतलब है कि मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के निर्देशानुसार धान खरीदी के साथ-साथ किसानों को समर्थन मूल्य का भुगतान भी शुरू कर दिया गया है। राज्य के किसानों से क्रय किए गए धान के मूल्य भुगतान के लिए छत्तीसगढ़ सरकार ने मार्कफेड को 26,200 करोड़ रूपए की बैंक गारंटी पहले से दे रखी है।

किसानों का मानना है कि धान खरीदी के लिए राज्य सरकार द्वारा शुरू की गई टोकन तुंहर एप्प की ऑनलाईन व्यवस्था से टोकन प्राप्त करने और धान बेचने में सहुलियत हो रही है। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय के कुशल नेतृत्व और किसान हितैषी नीतियों के चलते किसानों को जहां उनकी मेहनत का वाजिम दाम मिला हैं, वहीं किसानों का सम्मान भी बढ़ा है।

कृषि छात्रों ने किया ग्रामीण सूचना केंद्र का शुभारंभ

रायपुर। कृषि महाविद्यालय, रायपुर के बी.एससी. (कृषि) चतुर्थ वर्ष के ग्रामीण कृषि कार्य अनुभव (RAWE) कार्यक्रम के तहत छात्रों ने रायपुर जिले के धरमपुरा स्थित नकटी गाँव के महिला भवन में ''ग्रामीण सूचना केंद्र सह प्लांट क्लिनिक'' का शुभारंभ किया। यह केंद्र किसानों को आधुनिक कृषि तकनीक, पौध संरक्षण, कीट निदान तथा फसल संबंधी समस्याओं के समाधान हेतु वैज्ञानिक मार्गदर्शन प्रदान करेगा।

कार्यक्रम की शुरुआत RAWE समन्वयक ''डॉ. रविंद्र सोनी'' द्वारा मुख्य अतिथि ''डॉ. आरती गुहे'', अधिष्ठाता, कृषि महाविद्यालय रायपुर, के स्वागत से हुई। डॉ. सोनी ने अधिष्ठाता महोदय को छात्रों द्वारा अब तक किए गए कार्यों और आगामी योजनाओं की विस्तृत जानकारी भी प्रस्तुत की।

चतुर्थ वर्ष की छात्रा ''खुशी शर्मा'' ने RAWE अवधि में छात्रों द्वारा किए गए ग्रामीण कार्यों का प्रस्तुतिकरण किया, जिसमें किसान परिवारों से संपर्क स्थापित करना, कृषि-आर्थिक सर्वेक्षण, वृक्षारोपण, टूटी-फ्रूटी और जैम निर्माण, फसल निदान, किसान प्रशिक्षण तथा विभिन्न प्रदर्शनों और विस्तार गतिविधियों का विवरण शामिल था।

अपने उद्बोधन में ''डॉ. गुहे'' ने छात्रों की टीमवर्क और ग्रामीण सहभागिता की सराहना करते हुए कहा कि छात्रों का प्रयास किसानों को नए परिवर्तन अपनाने के लिए प्रेरित करेगा, जो इस केंद्र की स्थापना का प्रमुख उद्देश्य है।

कार्यक्रम में बड़ी संख्या में स्थानीय किसान एवं ग्रामीण उपस्थित रहे। साथ ही महाविद्यालय के प्राध्यापक ''डॉ. राम मोहन साव, डॉ. ऐश्वर्या टंडन, डॉ. दीप्ति पटेल, डॉ. वाई. के. मेश्राम एवं डॉ. पायल जायसवाल'' ने भी प्रतिभाग कर सामुदायिक सहयोग को मजबूत किया।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक विजय कुमार बोन्दिया द्वारा एल.आई.जी.-5, सेक्टर -2 शंकर नगर, रायपुर 492001 (छत्तीसगढ़) से प्रकाशित एवं कृषक जगत, 14 इंदिरा प्रेस कॉम्प्लेक्स, भोपाल (म.प्र.) से मुद्रित, सम्पादक : सुनील गंगराड़े, समन्वयक : अतुल सक्सेना, रायपुर : प्रेम प्रकाश सुल्लेरे, फोन : 0771-2420449, मो. : 9826255862, इस अंक का मूल्य रु. 12/-, वार्षिक शुल्क रु. 600/- RNI No.-CHHHIN/2002/10910, E-mail-info@krishakjagat.org

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

कृषक जगत
संस्थापक : स्व. माणिकचन्द्र बोन्द्रिया - स्व. सुरेशचन्द्र गंगराड़े

अमृत जगत

सौ से एक सौ बस दिन में पके, धान जातियां भाय।
अधिक पकें उत्तम अवधि में, फसल मनहर घर आय।

रिकॉर्ड खाद्यान्न उत्पादन : आभार के साथ पर्याप्त खाद - बिजली भी दें

भारत में पिछले 10 वर्षों में कुल खाद्यान्न उत्पादन में लगभग 106 मिलियन टन से भी अधिक की ऐतिहासिक वृद्धि दर्ज की गई है। वर्ष 2015-16 में कुल 251.54 मिलियन टन के मुकाबले पिछले साल 2023-24 के दौरान 357.73 मिलियन टन का रिकॉर्ड खाद्यान्न उत्पादन हुआ है। चावल का उत्पादन भी रिकॉर्ड स्तर पर बढ़कर 1501.84 लाख टन हो गया है। यह पिछले वर्ष के 1378.25 लाख टन चावल उत्पादन से 123.59 लाख टन अधिक है। गेहूं उत्पादन भी बढ़कर 1179.45 लाख टन हो गया है। इसी तरह मूंग का उत्पादन बढ़कर 42.44 लाख टन, सोयाबीन उत्पादन 152.68 लाख टन, मूंगफली उत्पादन 119.42 लाख टन की रिकॉर्ड वृद्धि हुई है। मक्का और श्री अन्न का उत्पादन 434.09 लाख टन और 185.92 लाख टन अनुमानित है। वर्ष 2024-25 के दौरान कुल तिलहन का उत्पादन रिकॉर्ड 429.89 लाख टन अनुमानित है, जो वर्ष 2023-24 के 396.69 लाख टन उत्पादन से 33.20 लाख टन अधिक है। तिलहन उत्पादन में रिकॉर्ड वृद्धि देखी गई क्योंकि मूंगफली और सोयाबीन का अनुमानित उत्पादन क्रमशः 119.42 लाख टन और 152.68 लाख टन रहा, जो पिछले वर्ष के क्रमशः 101.80 लाख टन और 130.62 लाख टन की तुलना में क्रमशः 17.62 लाख टन और 22.06 लाख टन अधिक है। रेपसीड और सरसों का उत्पादन 126.67 लाख टन अनुमानित है। कृषि उत्पादन में यह वृद्धि उत्साहजनक है इसका पूरा श्रेय देश के मेहनतकश किसानों को दिया ही जाना चाहिए। इस उपलब्धि पर प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान ने किसानों का आभार व्यक्त किया है। किसानों का आभार व्यक्त करना तो सरकार का फर्ज बनता है क्योंकि करीब डेढ़ अरब की जनसंख्या के लिए खाद्यान्न का उत्पादन किसान ही करते हैं। लेकिन जब खाद और बिजली की की कमी के साथ अधिसूचित फसलों का न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीदी जैसे मुद्दों पर किसानों को परेशान होना पड़ता है तब सरकार का किसानों को आभार व्यक्त करना केवल औपचारिकता मात्र लगता है। देश में नकली बीजों का व्यवसाय फल फूल रहा है, जिसका खामियाजा किसानों को उठाना

पड़ता है। खाद की कमी लगातार बनी हुई है। केंद्र और राज्य सरकारें कितना ही दावे कर लें कि खाद पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है और किसानों को समय पर खाद उपलब्ध हो जाएगा, सरकारें इस दावे पर खरी नहीं उतर रही है। रबी का मौसम की फसलों की बोवनी का काम तीव्र गति से जारी है और किसानों को खाद के लिए रात-रात भर सहकारी समितियों के सामने लाईन लगाना पड़ रहा है। जब उन्हें सहकारी समितियों से खाद नहीं मिलता तब वे अधिक राशि भुगतान कर निजी दुकानों से खरीदने को मजबूर हो जाते हैं। खरीफ के मौसम में बिजली की समस्या नहीं रहती लेकिन रबी की फसलों की सिंचाई के लिए सीमित घंटों के लिए बिजली की आपूर्ति की जाती है। मध्यप्रदेश में तो सिंचाई के लिए दस घंटे बिजली देने की व्यवस्था की गई है लेकिन वह भी किश्तों में दी जाती है। कड़ाके की सर्दी में रात के समय सिंचाई के लिए बिजली उपलब्ध होने का कोई औचित्य नहीं है। किसानों को दिन के समय पर्याप्त समय के लिए बिजली की आपूर्ति की जानी चाहिये। यह प्रश्न बार-बार उठता है कि खरीफ और रबी की फसलों की बोवनी के पहले किसानों को खाद की जरूरत होती है और सरकारें यह दावा भी करती हैं कि खाद की कोई कमी नहीं है तो उन्हें खाद के लिए दर-दर की ठोकरें क्यों खानी पड़ती है? खाद की कमी से जूझना मानों किसानों की नियति बन गई है। वैसे कृषि विभाग अनुमान भी लगा लेता है कि राज्य में कितने टन खाद की जरूरत है। आकलन के अनुसार थोड़ा अधिक मात्रा में खाद की व्यवस्था कर ली जाए तो किसानों को इस तरह परेशान नहीं होना पड़ेगा। जब न्यूनतम समर्थन मूल्य पर गेहूं और भावांतर योजना के लिए पंजीयन कराया जाता है, उसी तरह खरीफ और रबी के मौसम के पहले किसानों को कितना और कौन सी खाद की आवश्यकता है, पंजीयन कराने की व्यवस्था लागू करनी चाहिये ताकि मांग के अनुसार खाद का इंतजाम किया जा सकेगा। यदि पंजीयन के अनुसार खाद की उपलब्धता होती है तो उसी के अनुसार वितरण करने में आसानी होगी और वितरित करने वाले विभागों और संस्थाओं के कार्य में भी पारदर्शिता आएगी तथा किसानों को न तो खाद के लिए चक्कर लगाने पड़ेंगे और न ही खादों के वितरण में अनियमितता होने की सम्भावना होगी। इस पर भी जिम्मेदारों को विचार करना होगा कि किसान खाद के लिए रात-रात भर पंक्ति में खड़ा रहे या खेत में काम करे...। केंद्र सरकार और राज्य सरकारों को यह सुनिश्चित करना होगा कि अनुमानित मांग के अनुसार खाद की पर्याप्त मात्रा में व्यवस्था समय से पहले कर लें। एक कृषि मौसम में जितने खाद की खपत होती है, बफर स्टाक हमेशा उपलब्ध रहेगा तो जहां खाद की कमी हो रही है, वहां पहुंचाया जा सकता है। इससे किसानों को बाजार से महंगा खाद खरीदने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी, और उन्हें अतिरिक्त आर्थिक बोझ भी नहीं पड़ेगा।

ग्रामीण आजीविका : बकरी के महत्व को कम मत आंकिए

● भारत डोगरा

ग्रामीण पशुपालन में प्रायः गाय और भैंस को अधिक महत्व दिया गया है, पर अनेक निर्धन परिवारों से पूछने पर पता चलेगा कि उनके लिए बकरी-पालन का महत्व इससे कम नहीं है, शायद अधिक ही हो। अधिकांश निर्धन परिवारों के पास गाय और भैंस की संभावना अपेक्षाकृत कम होती है, जबकि कुछ बकरियां होने की संभावना कहीं अधिक है। यदि कम समृद्ध ग्रामीण परिवारों की दृष्टि से देखें तो बकरी पालन पशुपालन का अधिक महत्वपूर्ण पक्ष माना जा सकता है।

बकरी पालन के इस महत्व को समझते हुए 'सृजन' संस्था ने ग्रामीण आजीविका सुधारने के अपने प्रयासों में इसे समुचित महत्व दिया है व अनेक स्तरों पर बकरी-पालन आधारित आजीविका को सुधारने का प्रयास अपने अनेक कार्यक्षेत्रों में किया है। मध्यप्रदेश के शिवपुरी जिले में 'सृजन' के कार्यकर्ताओं ने बकरी-पालन संबंधी अपने पांच प्रयासों के बारे में बताया। पहला प्रयास तो यह है कि बकरियों के रहने के स्थान को अधिक स्वच्छ व सुरक्षित बनाया जाए। विशेषकर मेमनों के लिए अधिक सुरक्षित, अलग स्थान की व्यवस्था करने का प्रयास किया गया।

दूसरा प्रयास यह हुआ कि बकरियों के लिए बेहतर चारे की व्यवस्था की गई। उनके लिए अधिक पौष्टिक आहार तैयार किया गया। साथ में सामान्य पत्ते के चारे से भी धूल हटाकर, अधिक स्वच्छ रूप से खिलाने पर ध्यान दिया गया। आसपास के स्थानों में जहां बेहतर नस्ल की बकरी मिली वह उपलब्ध करवाई गई। बिक्री के बेहतर अवसर उपलब्ध करवाए

महात्मा गांधी की प्रिय बकरी की हैसियत जानना हो तो किसी भी आदिवासी समाज में चले जाइए। वहां बकरी न सिर्फ दुधारू जानवर, बल्कि लगभग बैंक का दर्जा रखती है। वक्त-बेवक्त जरूरत पड़ने पर बकरी बेचकर लोग अपना काम चला लेते हैं। कैसे किया जाता है, इसी बकरी का पालन-पोषण?

गए। अंत में सबसे महत्वपूर्ण प्रयास बकरियों की बीमारी के इलाज के लिए गांव के भीतर ही सुविधा उपलब्ध करवाने का प्रयास किया गया।

अनेक बकरी पालक बताते हैं कि बकरी का इलाज समय पर न होने के कारण इनकी मृत्युदर कई बार अधिक हो जाती है। इसके लिए 'सृजन' का उपाय है कि गांव में ही महिलाओं को बकरी के इलाज का प्रशिक्षण देकर 'पशु-सखी' तैयार की जाएं जिससे उचित समय पर व कम खर्च पर बकरियों का इलाज हो जाए और इसके लिए दूर न जाना पड़े। इसके साथ ही गांवों में अनेक महिलाओं को सम्मानजनक आजीविका का एक नया स्रोत मिल जाए।

शिवपुरी के गांवों में ऐसी 'पशु-सखी' बहुत सक्षम रूप में आगे आई हैं। सीमा जाटव ने इस कार्य में इतनी दक्षता प्राप्त कर ली है कि अब उनकी सेवाओं का उपयोग अन्य 'पशु-सखियों' को प्रशिक्षण देने के लिए होता है। उन्हें प्राकृतिक खेती में भी दक्षता प्राप्त है व वे इसका प्रशिक्षण भी देती हैं। मनीषा लोधी ने सामाजिक कार्य में शिक्षा प्राप्त की है। वे 'पशु-सखी' की भूमिका निभाने के साथ-साथ एक 'प्राकृतिक शिक्षा केन्द्र' भी चला रही हैं। इसके अतिरिक्त वे रात को सिलाई कार्य भी करती हैं। इस तरह की कुछ महिलाएं कई जिम्मेदारियां निभाते हुए ग्रामीण नेतृत्व में भी आगे आ रही हैं व मेहनत तथा निष्ठा का उदाहरण प्रस्तुत कर रही हैं।

मध्यप्रदेश के ही टीकमगढ़ जिले में अनेक ऐसी 'पशु-सखियां' हैं जिन्होंने आजीविका के इस नए स्रोत के बल पर अपने परिवार की नाजुक आर्थिक

स्थिति को संभाल लिया है। भारती अहिरवार नादिया गांव की ऐसी ही दलित महिला हैं। उन्होंने लखनऊ जाकर 'पशु-सखी' का प्रशिक्षण प्राप्त किया और बकरियों की बीमारी, पोषण, वैक्सीन आदि के बारे में बहुत कुछ सीखा। जब वे अपनी नई यूनीफार्म पहनकर व दवाओं का बैग तैयार कर दूसरे घरों में बकरी के इलाज के लिए जाने को तैयार हुईं, तो आस-पड़ौस के कुछ लोगों ने मजाक उड़ाया व छींटाकशी की, पर भारती ने इसकी परवाह नहीं की। अनेक बकरियों का सफल इलाजकर उन्होंने शीघ्र ही गांव में नया सम्मान प्राप्त कर लिया। गांववासियों ने भी महसूस किया कि गांव में ही अगर बकरी को सही समय पर इलाज मिल जाए तो उपयोगी होगा और इस पर खर्च भी बहुत कम होगा। भारती ने उन्हें बीमारी से बचाव के उपाय बताने भी शुरू किए व अपने पास उपलब्ध बकरी के अधिक पौष्टिक आहार के विषय में भी बताया।

जहां भारती की सेवाओं से गांव के स्तर पर बकरी पालन में सुधार हुआ, वहां भारती ने अपनी नई जानकारी का लाभ उठाकर अपने परिवार में भी बकरी पालन को बढ़ावा दिया। इस तरह भारती को पहले वर्ष में लगभग 60,000 रुपए की आय हुई तो उन्होंने इसका उपयोग अपने बच्चों की शिक्षा सुधारने में किया। ऐसी ही एक सफल 'पशु-सखी' ने बकरी पालन संबंधी एक सर्वेक्षण भी अपने गांव बिजरावन में किया। इस सर्वेक्षण में यह स्पष्ट हुआ कि गांव में लगभग 90 प्रतिशत परिवारों ने बकरियां पाली हुई हैं। औसतन एक परिवार के पास 5 से 10 बकरियां पाई गईं। इससे पता चलता है कि ऐसे अनेक गांवों के लिए बकरी पालन कितना महत्वपूर्ण है। विशेषकर कठिन समय में बकरी पालन से राहत मिल जाती है। इस स्थिति में 'सृजन' ने पशुपालन के क्षेत्र में बकरी पालन को प्रोत्साहित करने को प्राथमिकता दी व अनेक गांवों में बकरी पालन की स्थितियों में सुधार किया। इसके साथ अनेक महिलाओं को आजीविका का नया सम्मानजनक स्रोत मिला व महिला नेतृत्व को भी प्रोत्साहन मिला। हालांकि 'सृजन' के अधिकांश प्रयास बकरी पालन में सुधार के हैं, पर कुछ स्थानों पर संस्था ने निर्धन परिवारों को बकरियां उपलब्ध भी करवाई हैं। सरकारी कार्यक्रमों के साथ तालमेल बनाकर भी बकरी पालन को आगे बढ़ाने का प्रयास किया है। **(सप्रेस)**

कीटनाशकों के प्रयोग में सावधानियां

● दीपक चौहान ● डॉ. मृगेन्द्र सिंह
● डॉ. अल्पना शर्मा डॉ. बृजकिशोर प्रजापति
● भागवत प्रसाद पंद्रे

कीटनाशकों के प्रयोग में सावधानी ही सुरक्षा

किसान अपनी फसलों की सुरक्षा के लिए कीटनाशकों का प्रयोग करता है एवं यह कीटनाशक जहरीले तथा मूल्यवान होते हैं। इन कीटनाशकों के प्रयोग की जानकारी के आभाव में कृषक एवं कृषक परिवार को जान जोखिम का सामना करना पड़ता है, इसलिए कृषकों को इसके उपयोग की एवं उपयोग के बाद क्या-क्या सावधानी रखना चाहिए इसकी जानकारी रखना अत्यंत आवश्यक है। कीटनाशकों के घातक प्रभाव से बचने के लिए आवश्यक होता है की उन पर लिखे हुए निर्देशों का पालन सही तरीके से करें एवं किसी प्रकार की लापरवाही न बरतें क्योंकि थोड़ी भी लापरवाही बहुत बड़े नुकसान का कारण बन सकती है।

कीटनाशकों के प्रयोग से पहले सावधानियां

सर्वप्रथम किसानों को फसलों के शत्रु कीटों की पहचान कर लेना चाहिए, यदि पहचान संभव नहीं है तो स्थानीय स्तर पर उपस्थित कृषि विशेषज्ञ से कीट की पहचान करवा कर कीट के अनुरूप कीटनाशी का क्रय करना चाहिए।

● कीटनाशक का प्रयोग तभी करना चाहिए जब कीट द्वारा आर्थिक नुकसान की क्षति निम्न स्तर की सीमा से अधिक हो गयी हो।

● कीट को मारने का सही तरीका एवं समय का ध्यान रखना चाहिए।

● कीटनाशकों के विषाक्ता को प्रदर्शित करने के लिए कीटनाशक के डिब्बे पर तिकोने आकार का हरा, नीला, पीला एवं लाल रंग का निशान बना होता है। सबसे पहले लाल निशान वाले कीटनाशी का प्रयोग नहीं करना चाहिए क्योकि लाल निशान के कीटनाशी समस्त स्तनधारियों पर सबसे अधिक नुकसान करते है। लाल निशान वाले कीटनाशी की अपेक्षा पीले रंग के निशान वाले कीटनाशी कम तथा पीले रंग के कीटनाशी की अपेक्षा नीले रंग के निशान वाले कम नुकसान पहुंचाते है। सबसे कम नुकसान हरे रंग के निशान वाले कीटनाशी से होता है।

● कीटनाशक खरीदते समय हमेशा उसके उत्पादन की तिथि एवं उपयोग की अंतिम तिथि को अवश्य पढ़ लेना चाहिए ताकि पुरानी दवाई को खरीदने से बचा जा सके क्योंकि पुरानी दवा कम अथवा नहीं के बराबर असरदार हो सकती है, जिससे आर्थिक नुकसान से बचा जा सकता है।

● कीटनाशक के पैकिंग के साथ एक उपयोग करने के लिए निर्देशिका पुस्तिका अथवा लीफलेट को ध्यानपूर्वक पड़ना आवश्यक है, जिससे उपयोग का तरीका तथा मात्रा प्रयोग की जा सकती है।

● कीटनाशकों का भण्डारण हमेशा साफ सुथरी, हवादार एवं सूखे स्थान पर करें।

● यदि अलग-अलग समूहों के कीटनाशकों का प्रयोग करना हो तो एक के बाद दूसरे का प्रयोग करें।

● ऐसे कीटनाशकों का प्रयोग नहीं करें जिसके प्रयोग से पत्तों में रासायनिक अम्ल बनता हो।

कीटनाशियों के प्रयोग के बाद सावधानियां

● बचे हुए घोल को कभी भी पम्प में नहीं छोड़ें।

● खली डिब्बे को किसी अन्य काम में नहीं लें बल्कि उसे नष्ट कर दें।

● कीटनाशी के छिड़काव के समय प्रयोग में लाये गए कपड़े, बर्तन को अच्छी तरह से धोकर रखें।

● जिस भी कीटनाशक का प्रयोग करें उसका सम्पूर्ण विवरण लिखकर रख लें।

● बचे हुए कीटनाशक की शेष मात्रा को सुरक्षित स्थान पर भंडारित कर दें।

● पम्प को अच्छी तरह से साफकरके सुरक्षित स्थान पर रखें।

● कीटनाशी के कागज या प्लास्टिक को यदि जलाना हो तो उसके धुंए के पास नहीं खड़ा हों।

● कीटनाशी के छिड़काव के बाद अच्छी तरह से स्नान करके दूसरे वस्त्र पहने।

● कीटनाशी छिड़काव के बाद छिड़के गए खेत में किसी व्यक्ति एवं जानवर को नहीं जाने दें।

● कीटनाशी छिड़काव के बाद छः घंटे तक वर्षा नहीं हो। यदि वर्षा हो जाये तो पुनः छिड़काव करें।

● अंतिम छिड़काव एवं फसल की कटाई ता तुड़ाई के समय दवा में बताये अंतराल का अवश्य ध्यान रखें।

विष का प्राथमिक उपचार

सभी प्रकार की सावधानी रखने के उपरांत भी यदि कोई व्यक्ति इन कीटनाशकों का शिकार हो जाये तो निम्नलिखित सावधानियां अपनायें।

● रोगी के शरीर से विष को अति शीघ्र निकलने का प्रयास करें।

● विषमार दवा का तुरंत प्रयोग करें।

● रोगी को तुरंत पास के किसी अस्पताल या डॉक्टर के पास ले जायें।

● यदि जहर खा लिया हो तो एक ग्लास गुनगुने पानी में दो चम्मच नमक का घोल मिला कर उलटी करें।

● यदि व्यक्ति ने विष सूंघ लिया हो तो रोगी को शीघ्र खुले स्थान पर ले जायें, शरीर के कपड़े ढीले कर दें, यदि दौरे पड़ रहे हो तो अँधेरे स्थान पर के जायें।

● यदि साँस लेने परेशानी हो रही हो तो रोगी को पेट के सहारे लिटाकर उसकी बाँहों को सामने की और फैला लें एवं रोगी की पीठ को हल्के - हल्के सहलाते हुए दबाएं तथा कत्रिम श्वांस का प्रबंध करें।

इस प्रकार उपरोक्त सावधानियां को ध्यान में रखते हुए यदि कीटनाशियों का प्रयोग किया जाए तो इनसे होने वाले किसी भी प्रकार के नुकसान से बचा जा सकता है।

कीटनाशकों के प्रयोग से करते समय सावधानियां

● शरीर को पूरी तरह से बचाने के लिये ऐसे कपड़े पहने जो पूरी तरह से शरीर को ढक सके जिससे यदि कीटनाशक रसायन कपड़ों पर लग जाये तो उसे बदला जा सकता है एवं हाथों में रबर के दस्ताने अवश्य पहनें तथा मुँह पर मास्क लगा लें एवं आँखों की सुरक्षा के लिए चश्मा लगा लें।

● बहुत जहरीले कीटनाशी को प्रयोग करते समय अकेले कार्य नहीं करें एक या दो व्यक्तियों को खेत के बाहर मौजूद रहें आपातकाल में जल्द मदद मिल सके।

● कीटनाशी को मिलाने के लिए लकड़ी के डंडे का प्रयोग करें तथा घोल को ढककर रखें ताकि उसे छोटे बच्चे एवं कोई पशु धोखे में पी न ले।

● कीटनाशी छिड़कने वाले को छिड़काव की पूरी जानकारी हो तथा उसके शरीर पर कोई घाव नहीं हो तथा छिड़काव के समय चलने वाली हवा से बचें।

● कीटनाशी का घोल बनाते समय किसी बच्चे या अन्य आदमी या जानवर को पास में नहीं रहने दें।

● दवा के साथ मिली हुई प्रयोग पुस्तिका को अच्छे से पड़ कर उसके अनुसार कार्य करें।

● कीटनाशक का छिड़काव करने के पश्चात त्वचा को अच्छी तरह से साफकर लें।

● छिड़काव के समय साफपानी की पर्याप्त मात्रा पास में रखें।

● कीटनाशी मिलते समय जिस दिशा से हवा का बहाव हो रहा हे उसी दिशा में खड़े होकर कीटनाशी को मिलायें।

● कीटनाशी का धुंआ सांस के द्वारा शरीर के अंदर नहीं जाने दें।

● एक बार जितनी आवश्यकता हो उतना ही कीटनाशी ले जायें।

● कीटनाशक छिड़कने वाले यंत्र की जाँच कर लें, यदि यंत्र सही काम नहीं कर रहा हो तो उसकी मरम्मत कर लें तथा नोजल को कभी भी मुँह से खोलने का प्रयास नहीं करें।

● तरल कीटनाशियों को सावधानीपूर्वक मशीन में डालें एवं यह ध्यान रखें की किसी भी प्रकार मुंह, कान, नाक, आँख आदि में रसायन न जाए। यदि गलती से ऐसा हो तो तुरंत साफ पानी से बार - बार प्रभावित अंग को धोयें।

● कीटनाशी का प्रयोग करते समय किसी प्रकार का धूम्रपान या कोई खान -पान नहीं करें।

● कीटनाशी का प्रयोग करते समय यह सुनिश्चित कर लें की कीटनाशी की मात्रा पूरी तरह से पानी में घुल गयी हो।

● हवा के विपरीत दिशा में खड़े होकर छिड़काव या भुरकाव करें।

● छिड़काव के लिए उपयुक्त समय सुबह या सायंकाल का हो यथा यह ध्यान रखें की हवा की गति 7 किमी प्रति घंटा से कम ही हो तथा तापमान 21 डिग्री सेंटीग्रेड के आसपास रहना सर्वोत्तम होता है।

● फूल आने पर फसलों पर कम से कम छिड़काव करें और यदि छिड़काव करना हो तो हमेशा सायंकाल में ही छिड़काव करें, जिससे मधुमक्खियां रसायन से प्रभावित न हो।

● कीटनाशकों का व्यक्ति पर प्रभाव दिखने लगे तो तुरंत डॉक्टर के पास ले जाए साथ ही कीटनाशी का डिब्बा भी लेकर जायें।

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

● डॉ. सुनील कुमार मंडल ● डॉ. सुरेन्द्र प्रसाद
सहायक प्राध्यापक, क्षे. अनु. केन्द्र, झंझारपुर
कीट विज्ञान वि., स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पूसा
● डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय,
पूसा, समस्तीपुर, बिहार
skmandal6464@gmail.com

मटर में एकीकृत कीट-रोग प्रबंधन

मटर रबी मौसम में उगायी जाने वाली एक महत्वपूर्ण नकदी फसल है, जिसका उपयोग ताजा सब्जी के अतिरिक्त सूखी मटर व डिब्बाबन्दी के रूप में किया जाता है। मटर में प्रोटीन एवं विटामिन के साथ-साथ कई खनिज लवण पाये जाते हैं। मटर एक बहुत लाभदायक खेती है, परन्तु इसके लिए आवश्यक है कि इस फसल में आक्रमण करने वाले कीटों एवं बीमारियों को सही व उपयुक्त समय पर प्रबंधन करना, वरना अगली तुड़ाई में भारी कमी आ जाती है व उत्पादन बहुत कम हो जाता है। अतः मटर में लगने वाले कीड़ों एवं बीमारियों के बारे जानकारी प्राप्त करना तथा उनका सही समय पर प्रबंधन करने के लिए ज्ञान जरूरी है।

(अ) प्रमुख कीट

तना मक्खी (स्टेम फ्लाई): मटर में इस कीट

का प्रकोप अगेती फसल में अधिक होता है। यह कीट अक्टूबर-नवम्बर के महिनों में अधिक सक्रिय रहता है। जैसे ही पौधा जमीन से निकलता है, इसकी सुण्डी (कैटरपिलर) खा जाती है, जिससे खेत में पौधों की संख्या बहुत कम हो जाती है। अधिक आक्रमण होने पर तो कभी-कभी पुनः बुवाई करनी पड़ती है। अण्डे से निकली सुंडियां जमीन की सतह के नजदीक बाह्य तने में प्रवेश करती है एवं प्यूपा में परिवर्तित होने से पूर्व निकास द्वार भी बना लेती है। सुंडियां अन्दर ही अन्दर तने को खाकर सुरंग बना लेती हैं। क्षतिग्रस्त पौधों की पत्तियां पीली पड़ जाती हैं। तने में दरार पड़ जाती है एवं पौधा मुरझाने लगता है और अन्त में पौधा मर भी जाता है। पत्तियों पर चमकीले रंग की धारियों का पाया जाना इस कीट के आक्रमण के शुरू होने का संकेत देता है।

नियंत्रण:

● जिन स्थानों पर इस कीट का प्रकोप हमेशा बना रहता है, वहाँ बुवाई के समय कार्बोफ्यूरान 3जी या फ्रीप्रोनील 0.3 जी.आर. को 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से खेत की अंतिम जुताई के समय मिट्टी में मिलायें।

● नोभाल्यूरान 30 ईसी या डायक्लोरभास 76 ईसी 1.5 मिली प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

फली छेदक (पोड बोरर): इस कीट का प्रकोप

मटर में फूल आने से लेकर फली बनने तक मार्च-अप्रैल तक रहता है। इसकी सूंडियां (कैटरपिलर) फलियों एवं दानों को खाकर क्षति पहुँचाती है। अण्डों से निकली हुई सुडियां अपने चारों ओर जाल बुनती है और फिर छेद कर फली में घुसकर दानों को खाती रहती है। ग्रसित फलियों में कुछ दाने कटे हुए तथा कुछ पूर्ण नष्ट हुए पाये जाते हैं। जिससे फलियों की बाजार मूल्य भी कम हो जाती है तथा उपज पर भी प्रतिकूल असर पड़ता है।

नियंत्रण:

● गर्मी के महिनों में खेत की अच्छी तरह मिट्टी पलटने वाले हल से जुताई करें, ताकि कीट का प्यूपा बाहर आकर मर जाय।

● 5-7 फेरोमोन ट्रैप प्रति हेक्टेयर की दर लगायें, जिसके कैप्सूल या ल्यूर (हेलील्यूर) को 15 दिनों के अन्तर पर बदलते रहें। ट्रैप को फसल से 1.0-1.5 फीट उपर लगायें।

● रात्रि में वयस्क कीट को आकर्षित करने के लिए लाईट ट्रैप (प्रकाश प्रपंच) (1.0-2.0 ट्रैप/हेक्टेयर) लगायें।

● फूल वाली अवस्था पर नीम तेल 5 मिली प्रति लीटर पानी की दर से फसलों पर छिड़काव करें।

● एनपीवी 250 एलई प्रति हेक्टेयर (1 मिली/लीटर पानी) की दर से शाम के समय छिड़काव करें। घोल में कच्ची शक्कर (500 ग्राम) एवं टीपोल (10 मिली) मिलायें। घोल का पानी खारा नहीं हो, क्योंकि खारे पानी में कार्बोनेट जो है, वो बाईकार्बोनेट में बदलकर अप्रभावी हो जाते हैं।

● कीटों के अधिक प्रकोप की स्थिति में इंडोक्साकार्ब 14.5 एससी का 1.5 मिली/लीटर पानी या इमामेक्टिन बेंजोएट 5 एसजी का 1.0 मिली/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

पर्ण सुरंगक (लीफमाईनर): इस कीट का प्रकोप मटर के निचली व मध्य पत्तियों में दिसम्बर

माह के अंत में प्रारम्भ होकर फरवरी माह के अंतिम व मार्च के प्रथम सप्ताह तक चरम सीमा पर पहुँच जाता है। इसकी सुंडियां पत्तियों के हरे भाग (क्लोरोफिल) को खाती है, जो टेढी-मेढ़ी अनियमित आकृतियां बन जाती है। फलस्वरूप पत्तियां भोजन नहीं बना पाती है और पौधों की वृद्धि रूक जाती है। अत्यधिक ग्रसित पत्तियां सूख जाती हैं तथा पौधों में फूल व फली कम बनते हैं।

नियंत्रण:

● समय पर बुआई करें, क्योंकि पिछेली फसल में इस कीट का प्रकोप ज्यादा होता है।

● बुवाई से एक दिन पहले खेत तैयार करते समय अंतिम जुताई के वक्त फ्यूराडान 3जी या फ्रिप्रोनिल 0.3 जी.आर. को 25 किलोग्राम की दर मिट्टी में मिला दें।

● डाइक्लोरभास 76 ईसी (1 मिली/लीटर पानी) का छिड़काव नई पत्तियाँ आने के समय करें।

● कीटों के अत्यधिक प्रकोप की स्थिति में मैलाथियान 50 ईसी या डायमेथोएट 30 ईसी (1.5 मिली/लीटर पानी) का छिड़काव करें।

माहू (एफिड): इस कीट के शिशु एवं वयस्क दोनों ही मटर के कोमल तनों, पत्तियों की निचली सतहों, फूलों, कलियों तथा फलियों का रस चूसकर पौधे के विभिन्न कोमलांगों को क्षति पहुँचाती है। साथ ही यह एक मीठा द्रव (मधुरस) भी स्त्रावित करते हैं, जिससे फफूंद (कवक) का आक्रमण भी शुरू हो जाता है। कीटों से आक्रान्त पौधे छोटे रह जाते हैं तथा पत्तियाँ पीली पड़ जाती है। ग्रसित फलियाँ छोटी रह जाती है जिसमें या तो दाने नहीं बनते है, यदि बनते भी है तो छोटे रह जाते हैं।

नियंत्रण

● डायमेथोएट 30 ईसी (2 मिली/लीटर पानी) या ईमिडाक्लोप्रिड 17.8 एसएल (0.25 मिली/लीटर पानी) या डायक्लोरभास 76 ईसी (1 मिली/लीटर पानी) को मिलाकर छिड़काव करें। यदि आवश्यक हो तो छिड़काव को 15-20 दिन बाद पुनः दोहरायें।

मूल ग्रन्थी व सूत्रकृमि (नेमाटोड): इस सूत्रकृमि (नीमाटोड) के प्रकोप से पौधों की जड़ों में गाठें बन जाती हैं। पौधा पीला पड़ने के साथ बढ़वार रूक जाती है, परिणामतः पैदावार में कमी आती है।

नियंत्रण:

● फसल-चक्र अपनायें।

● यदि फसल में सूत्रकृमि के प्रकोप होता है तो खेत में बीज की बुवाई के समय 25 किलोग्राम फ्यूराडान 3 जी. प्रति हेक्टेयर की दर से भूमि में मिलायें।

प्रमुख विमारियाँ:

उखठा (ग्लानि) रोग: इस रोग से पौधों के जड़ों पर आक्रमण होता है, जो इसके प्रभाव से जड़ें काली पड़ जाती हैं। प्रभावित पौधा झुलस कर मर जाता है। अंग्रेजी किस्में इस रोग से ज्यादा प्रभावित होती हैं। फसल को अक्टूबर के अन्तिम सप्ताह में या नवम्बर माह में बुवाई करने से इसके आक्रमण से बचाया जा सकता है।

नियंत्रण:

● बुवाई से पूर्व बीजों को 2 ग्राम कार्बेन्डाजिम प्रति किलोग्राम बीज या थायरम या कैप्टान या मैंकोजेब 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीजोपचार करें।

● मैंकोजेब 2 ग्राम या घुलनशील गंधक 3 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से 10-15 दिनों के अन्तराल पर आवश्यकतानुसार 2-3 बार छिड़काव कर सकते हैं।

● 20-25 किलोग्राम सल्फर पाउडर को 10 किलोग्राम राख में मिलाकर प्रति हेक्टेयर भुरकाव करें।

● जिंक मैंगनीज कार्बोनेट 2 किलोग्राम प्रति 1 हजार लीटर में घोल बनाकर प्रति हेक्टेयर छिड़काव करें।

● प्रोपीकोनाजोल या टाइडामेफान या हेक्साकोनाजोल को 800 ग्राम/हेक्टेयर की दर से छिड़काव कर सकते हैं।

चूर्णिल आसिता (पाउड्री मिल्डयू): यह एक फफूंदजनित रोग है, जिससे पौधों की पत्तियां

(निचली सतह), तने, शाखाओं एवं फलियों पर सफेद पाउडर जैसा (धब्बे) दिखाई देता है। इससे पौधे की बढ़वार रूक जाती है एवं उत्पादन में भी भारी कमी आती है।

नियंत्रण

● समय पर बुवाई करें। विलम्ब से बुवाई करने पर इस रोग का प्रकोप अधिक होता है।

● प्रतिरोधी किस्में जैसे- शिखा, रचना, सपना-2 एवं 5, पूसा प्रगति एवं पंत मटर-5 की बुवाई करें।

● रोग से ग्रसित पौधों को उखाड़कर जला दें।

● 2 ग्राम घुलनशील गन्धक या 1 मिली कैराथियान या केलेक्सीन प्रति लीटर पानी का घोल बनाकर छिड़काव करें। यह छिड़काव 10 दिन के अन्तराल पर आवश्यकतानुसार दोहरायें।

पशुओं का चारा प्रबंधन

● डॉ. ओ.पी. दीनानी

पशुओं के रखरखाव एवं प्रबंधन में लगभग 60 प्रतिशत लागत चारा व दाना में आती है। पशुओं के लिये आहार की व्यवस्था सुनिश्चित करने हेतु चारा बैंक बनाया जावे। जिसमें शुष्क आहार पैरा कुट्टी एवं गेहूँ का संग्रहण किया जावे। पशुओं के लिए गोठान में सस्ता हरे चारे के रूप में अजोला का उत्पादन कर पशुओं को खिलाया जाये। सूखी घास का परिक्षण हे के रूप में तथा हरी घास का अचार साइलेज के रूप में कर इसे पशुओं को खिलाया जाये। वर्षभर हरे चारे की उपलब्धता पशुओं हेतु सुनिश्चित की जावे। हरे चारे हेतु बहुवर्षीय फसल नेपियर की विभिन्न किस्में अधिक उपयोगी है। गोचर भूमि का चिन्हांकन कर चारा उत्पादन किया जा सकता है। मक्का, ज्वार, बाजरा की उपलब्धता अधिक होने पर कटाई करके उसकी कुट्टी काटकर साइलेज बना लेना चाहिये। खाद्य औद्योगिक उप–उत्पाद का उपयोग पशु आहार में किया जा सकता है।

मौसमी चारा फसलें :–

खरीफचारा फसलें– ज्वार, बाजरा, मक्का, मकचरी, लोबिया एवं ग्वार

रबी चारा फसलें– बरसीम, जई, रिजका

जायद–लोबिया, ज्वार एवं मक्का

बहुवर्षीय चारा फसलें :–

संकर बाजरा नेपियर घास (हाथी घास), गिनी घास, नंदी, अंजन, दीनानाथ, स्टाइलो (दलहन), त्रिसंकर नेपियर बाजरा, पैरा घास

फसल चक्र–1 : संकर बाजरा नेपियर/मक्का+लोबिया– ज्वार+लोबिया– बरसीम.जापानी सरसों

वर्ष भर हरा चारा उत्पादन हेतु निम्नलिखित फसल चक्रण उपयुक्त है–

फसल चक्र–2 : संकर बाजरा नेपियर/बहु कटाई वाली ज्वार– बरसीम/जई

नेपियर चारा का उत्पादन तकनीक–

मृदा एवं खेत की तैयारी : उचित जल निकास वाली टोमर भूमि सर्वोत्तम होती है। एक गहरी जुताई तत्पश्चात 2–3 हैरो या कल्टीवेटर में करके पारा लगा दिया जाता है।

खाद एवं उर्वरक : नेपियर की जड़ों की रोपाई से पूर्व 250 क्विंटल सड़ी गोबर की खाद प्रति हेक्टेयर की दर खेत में अच्छी तरह मिला लें। तत्पश्चात 60 :40 :30 कि.ग्रा. एन.पी.के.प्रति हेक्टेयर का प्रयोग करें। इसके बाद प्रत्येक कटाई पर 40 कि.ग्रा. नत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़कें।

बुवाई का समय एवं विधि : सिंचित क्षेत्रों की जगह पर फरवरी के दूसरे सप्ताह से सितम्बर तक एवं असिंचित क्षेत्रों के स्थान पर वर्षा ऋतु में इसकी रोपाई की जा सकती है। नेपियर की जड़ तने की पंक्ति से पंक्ति एवं पौध से पौध की दूरी 50 सेमी रखें। यदि रबी में बरसीम की फसल को अंतर सस्य में बोया जाता है तब नेपियर की पंक्ति से पंक्ति की दूरी बढ़ाकर 2.5–3.0 मीटर कर सकते हैं।

जड़ सहित तनों की मात्रा– एक हेक्टेयर क्षेत्र में रोपाई के लिए 20,000–40,000 कल्लों की आवश्यकता पड़ती है।

सिंचाई– यदि रोपाई फरवरी माह में की गई है। तो पहली सिंचाई रोपाई के तुरंत बाद एवं दूसरी एक सप्ताह बाद करनी चाहिये। गर्मी के दिनों में प्रत्येक 15–16 दिन के अंतराल पर सिंचाई करें।

निंदाई गुड़ाई– खरपतवार की रोकथाम के लिये रोपाई के 30 दिन बाद एक निंदाई गुड़ाई अवश्यक करें।

कटाई– प्रथम कटाई रोपाई के 60 दिन बाद तत्पश्चात प्रत्येक कटाई 35 दिन एवं गर्मी के दिनों में 45 दिन के अंतर पर करते हैं।

उपज– औसतन प्रति हेक्टेकर प्रतिवर्ष 1200 क्विंटल हरा चारा प्राप्त होता है।

चारागाह का विकास भी पशु पोषण के लिए किया जा सकता है। जिसमें निम्नानुसार चारा उत्पादन किया जा सकता है।

देशी बबूल	:	अंजन घास . स्टाइलो
अंजप पेड़	:	अंजन घास . स्टाइलो
सूबबूल	:	गिनी घास . स्टाइलो
गूलर	:	दीनानाथ घास . स्टाइलो
सफेद सिरिस	:	अंजन घास . स्टाइलो
कचनार	:	दीनानाथ घास . स्टाइलो

दूध उत्पादन के लिए पशुओं का चुनाव

● डॉ. प्रमोद शर्मा

पशु पालक भाई पशु हाट या बाजार में पशु खरीदने जाते हैं तो उनके साथ बड़ी समस्या यह रहती है कि अधिक दुग्ध उत्पादन हेतु/भैंस का चुनाव कैसे करें। इस समस्या के निवारण के लिये आवश्यक जानकारी इस लेख के माध्यम से प्रदाय की जा रही है। दूध उत्पादन हेतु पशुओं का चुनाव करते समय पशुपालकों को निम्नलिखित बिन्दुओं पर ध्यान देना होगा।

(1) बाह्य आकृति के आधार पर
(2) वंशावली के आधार पर
(3) संतान के उत्पादन के आधार पर

बाह्य आकृति के आधार पर :

हाट या मेले में जहाँ कि पशुओं की जानकारी उपलब्ध नहीं होती है, वहाँ पर दुधारू पशुओं का चुनाव, उनकी बाह्य आकृति के अनुसार किया जाता है। इसमें कुछ प्रमुख बिन्दुओं पर ध्यान दें।

शारीरिक बनावट : दुधारू गाय की पहचान उसकी त्रिभुजाकार शारीरिक बनावट से की जा सकती है। ऐसी दुधारू गाय का पिछला भाग आकार में बड़ा और भारी, परन्तु अग्रिम भाग अपेक्षाकृत पतला और छोटा होता है। दुधारू होता है। दुधारू गाय की त्वचा पतली, ढीली, चिकनी और मुलायम होती है।

पाँव : पशु के अगले पैर का नीचला भाग खड़ा (सीधा) होता है तथा पिछले पैर बगल से देखने पर हासिये के आकार के होते हैं।

छाती : दुधारू पशुओं की छाती चौड़ी, पसली अंदर की ओर होना चाहिए। आँखें चौकनी और चमकीली होनी चाहिए।

अयन एवं थन का आकार : दुधारू गाय का अयन का अगला हिस्सा पुष्ट और वृहद होना उचित माना जाता है। पिछले भाग से अयन चौड़ी दिखनी चाहिए तथा शरीर से इस तरह जुड़ा हो ताकि उथला जैसा लगे। अयन को स्पर्श करने पर वह मुलायम प्रतीत होता है। जिसकी दुग्ध शिराएँ विशेष रूप से विकसित होती है। गाय अथवा भैंस के अयन चार थनों में विभाजित रहते हैं। गाय का थन 5–6 सेमी लम्बा और 20–25 मि.मी. व्यास का हो, वह गाय अच्छी समझी जाती है समतल भूमि में खड़ी एक दुधारू गाय के थनों और जमीन के बीच 40–45 सेमी या अधिक से अधिक 48 सेमी की दूरी आदर्श मानी जाती है। झूलते या लपकते हुए अयन अच्छे नहीं माने जाते हैं, क्योंकि जब गाय व भैंसे चरने हेतु छोड़ी जाती है तो काँटे या नुकेले पदार्थ से थन को जख्म होने की संभावना रहती है और थनैला रोग की समस्या बढ़ जाती है। अयन में थनों की स्थिति समान दूरी पर होना चाहिए। यदि थनों में सूजन या दर्द आदि हो तो ऐसे गायों का चयन नहीं करें।

दूध की मात्रा का परीक्षण : हाट बाजार में गाय/भैंस खरीदते समय यदि तीन समय का दूध उत्पादन नापा जाए और औसत निकालकर गाय की दुग्ध उत्पादन क्षमता का सहीं आकलन किया जा सकता है।

उम्र के आधार पर : पशुओं की उम्र उनकी स्थायी कृन्तक जोड़ा दाँत तथा सींग पर उभरे घेरों द्वारा ज्ञात की जा सकती है। गाय या बैल की प्रथम स्थायी कृन्तक जोड़ा दाँत लगभग दो वर्ष में दिखने लगता है। जब कि पूरे कृन्तक जोड़ा दाँत 3–1/2 से 4 साल की उम्र में निकल आते हैं। अत: युवा, बूढ़े व अधिक उम्र के पशुओं की सही पहचान उनकी स्थायी कृन्तक दाँतों के आधार पर संभव और आसान होता है, क्योंकि अधिक उम्र के पशुओं के दुग्धोत्पादन में गिरावट आती है। दाँत के अतिरिक्त पशु की सींग पर उभरे घेरों से भी उसकी उम्र का अनुमान लगाना संभव है। सींग के घेरों की संख्या में दो और जोड़ देने पर उम्र का पता लगाया जा सकता है।

वंशावली के आधार पर :

आर्थिक पहलू से गाय एवं भैसों के गुणों को तीन क्रमों मं बाँटा गया है 1. शारीरिक विकास, 2. दूध उत्पादन और 3. प्रजनन

दुधारू पशुओं की पहचान नस्ल के आधार पर अधिकांशत: की जाती है। प्रत्येक नस्ल के शारीरिक विकास उनकी वंशावली के आधार पर होता है। पशुओं के जनने के बाद दूध का उत्पादन बहुत कुछ अनुवांशिकता पर निर्भर करता है। माता–पिता से गुण बच्चों में जाते है, अत: दुधारू पशु के बच्चे भी अधिक दूध देने की क्षमता रखते है। बर्शत उन्हें अच्छा आहार एवं उत्तम व्यवस्थापन प्राप्त हो। सांड को दुग्ध प्रक्षेत्र का आधा हिस्सा माना जाता है। क्योंकि एक सांड से बहुत से बच्चे पैदा हो सकते हैं। अत: सांड को प्रजनन हेतु लाने के समय ठीक से चयन करना बहुत आवश्यक है। जनन और जननी दोनों का ही प्रभाव संतान के लक्षणों पर होता है।

संतान के उत्पादन के आधार पर :

दुधारू पशुओं का चुनाव उनकी संतान के उत्पादन के आधार पर किया जाना अधिक लाभकारी होता है। इन संतान में माता पिता दोनों के गुण सम्मिलित रहते है, अत: जिन पशुओं की संतान की उत्पादन क्षमता अधिक रहीत है, उन्हीं के आधार पर चयन किया जा सकता है। दो ब्यातों का अंतराल करीब 15 माह होना चाहिए ब्याने के तीन माह पश्चात ही गाय का पुन: गर्भधारण कर लेना अच्छा माना जाता है। पशुओं के आहार एवं वातावरण पर पशुधन की उत्पादकता एवं पशुओं की गुणवत्ता निर्भर करती है। परन्तु अच्छी गुणवत्ता के पशुओं का उत्पादन, उनमें पाये जाने वाले अनुवंशीय गुणों पर आधारित होता है।

पशुपालकों को सुझाव दिया जाता है कि दुधारू पशु का चुनाव करते समय उनकी शारीरिक बनावट, नस्ल उत्पादन क्षमता, उम्र इत्यादि बिन्दुओं पर विशेष रूप से ध्यान दिया जाना चाहिये। इसके अतिरिक्त यह भी देखना चाहिये की पशु पूर्णरूप से रोगमुक्त हो। जहाँ तक संभव हो, गर्भवती गायें, भैसों का क्रय करना उचित रहता है। इसमें धोखाखड़ी की संभावना क्षीण हो जाती है।

समस्या -समाधान

समस्या – मैं टमाटर लगाना चाहता हूं, अच्छे बीज कहां मिलेंगे, तकनीकी भी बतायें।

– उमराव सिंह कुशवाह

समाधान– *आप टमाटर लगाना चाहते हैं आपने अच्छी जाति के बीज के विषय में जानकारी चाही तथा उत्पादन तकनीकी पर भी मार्गदर्शन चाहते हैं आप तो कृषक जगत के सदस्य हैं आपकी चाहे अनुसार बिन्दुवार जानकारी निम्नानुसार है।*

- *नर्सरी लगाने का समय नवम्बर–दिसम्बर तथा पौध रोपाई दिसम्बर–जनवरी।*

- *उन्नत किस्म पूसा रूबी, पूसा 120, शीतल, अर्का, सौरभ, काशी अमृत आदि।*
- *सामान्य किस्मों का 300–400 ग्राम तथा संकर किस्म का 150–200 ग्राम बीज पर्याप्त होगा।*
- *यूरिया 260 किलो, सिंगल सुपर फास्फेट 375 किलो तथा म्यूरेट ऑफ पोटाश 100 किलो/हेक्टर की दर से डालें।*

अच्छे बीज के लिये निम्न पते पर सम्पर्क करें।

- *उपसंचालक उद्यानिकी, विदिशा*

समस्या – क्या हमारे यहां औषधि फसल सर्पगंधा लगा सकते हैं, कब लगायें तकनीकी जानकारी दें।

– यमुना प्रसाद वर्मा

समाधान– *आपका रुझान औषधि फसलों की तरफ हो रहा है यह अनुकरणीय है आप सर्पगंधा अच्छी तरह से लगा सकते हैं। और लाभ कमा सकते हैं। निम्न तकनीकी आपके एवं अन्य पाठकों के लिये*

- *दोमट भूमि सर्वोत्तम होती है लाल भूमि में भी लगाया जा सकता है।*

- *जातियों में जवाहर सर्पगंधा 1 जो प्रदेश में विकसित की गई है लगायें।*
- *6–8 किलो बीज/हे. की दर से पर्याप्त होगा। बीज को 12 घंटे पानी में डुबोकर रखें तथा सुखाकर 3 ग्राम थाईरम/किलो बीज से उपचारित करें।*
- *लगाने का उपयुक्त समय मई है। बीज को पहले नर्सरी में डालें 40–50 दिनों बाद उनको मुख्य खेत में रोपें।*
- *यूरिया 40 किलो, सिंगल सुपर फास्फेट 250 किलो तथा म्यरेट ऑफ पोटाश 60 किलो/हे. की दर से डालें।*
- *4–5 सिंचाई आवश्यकतानुसार दी जाये।*

समस्या– राई–सरसों तथा अन्य तिलहनी फसलों में क्या सिंचाई लाभदायक होती है यदि हां, तो बतायें कितनी और कब।

– जयदेव राव, *मुलताई*

समाधान– *राई–सरसों या अन्य तिलहनी फसलों में सिंचाई के विषय में आपने पूछा है आमतौर पर दलहन/तिलहन को वर्षा आधारित स्थिति में लगाया जाता है। राई–*

सरसों अलसी–कुसुम सामान्य रूप से रबी तिलहनी फसलें होती हैं। जिसमें से कुसुम (करडी) की जड़ें लम्बी गहराई तक जाती हैं। इन फसलों को यदि एक पानी मिल जाये तो उत्पादकता बढ़ाई जा सकती है। अनुसंधान आधारित परिणामों पर राई–सरसों में पहली सिंचाई बुआई के 30–40 दिनों बाद तथा दूसरी फली बनते समये दी जाना चाहिये। अलसी में भी इसी प्रकार से सिंचाई करना हितकर होगा। कुसुम की फसल में भी पहली सिंचाई बुआई के 30–40 दिनों बाद तथा दूसरी फूल अवस्था में दें तो अच्छा लाभ मिल सकता है। सिंचाई का स्रोत निश्चित हो तो बुआई पूर्व सिफारिश के आधार पर उर्वरक उपयोग यदि नहीं किया गया हो तो सिंचाई का पूर्ण लाभ नहीं मिल सकेगा।

समस्या- फास्फोरस की कमी के सामान्य लक्षण क्या हैं?

समाधान- फास्फोरस की कमी से पौधों की पत्तियों का रंग बैंगनी या गहरा हो जाता है। पुरानी पत्तियां आरम्भ में पीली और बाद में लाल-भूरी पड़ जाती हैं। पत्तियों के शिरे सूखने लगते हैं। पौधों की वृद्धि दर प्रतिदर कम हो जाती है। पौधे बौने,पतले सीधे तथा कम पत्तियों वाले होते हैं। कमी में जड़ों का विकास कम होता है, फुटाव कम होता है। बालियां दाने कम बनते हैं। दाने देर से बनते हैं। फसल देर से पकती है। दाने की अपेक्षा भूसे का अनुपात बढ़ जाता है। पौधों पर रोगों का हमला अधिक होता है। दलहनी फसलों में जीवाणुओं द्वारा नाइट्रोजन का स्थिरीकरण कम होता है।

समस्या- पोटेशियम का पौधों के पोषण में क्या कार्य है?

समाधान- पोटेशियम, पत्तियों में शर्करा और स्टार्च के निर्माण की कुशलता वृद्धि करता है। यह दोनों के आकार तथा भार को बढ़ाता है। नाइट्रोजन की दक्षता को बढ़ाता है। पोटेशियम कोशिका पारगम्यता में सहायक होता है कार्बोहाइड्रेट के स्थानान्तरण में सहायता करता है और पौधे में लोहे को अधिक चल रखता है। पोटेशियम पौधों में रोगों के प्रति प्रतिरोधिता को बढ़ाता है। प्रोटीन संश्लेषण को बढ़ाता है। पौधे की सम्पूर्ण जल व्यवस्था को नियंत्रित करता है और पौधों को पीले तथा सूखे से रक्षा करता है। पौधों के तने को कठोरता प्रदान करके गिरने से बचाता है। इसके अतिरिक्त पौधों की विभिन्न क्रियाओं को नियंत्रित करने वाले एन्जाइमों को संचालित करता है।

समस्या- रसायनिक उर्वरक श्रेष्ठ है या अन्य जैविक खादें। इनमे से कौन सी खाद इस्तेमाल की जाए?

समाधान- क्या उर्वरकों के निरन्तर प्रयोग से भूमि की दशा बिगड़ जाती है? जैविक खादें और उर्वरक ही एक-दूसरे के सहयोगी हैं। जोकि एक-दूसरे की फसल द्वारा प्रयोग करने की क्षमता बढ़ाते हैं। उर्वरकों को असंतुलित मात्रा, भूमि की किस्म के अनुसार सही उर्वरक न प्रयोग करने से भूमि की दशा थोड़ी बिगड़ सकती है। परन्तु इन दोनों ही बातों का ध्यान रखें तो उर्वरकों के निरन्तर प्रयोग से भी दशा पहले की अपेक्षा सुधर सकती है। अकेले जैविक खादों द्वारा पोषक तत्वों की पूरी मात्रा देना असम्भव ही है क्योंकि उनको पोषक तत्वों की आवश्यकता पूर्ति करने की क्षमता सीमित ही है। दूसरी ये अधिक मात्रा में उपलब्ध भी नहीं है। तीसरे इनका ढोना और खेत में डालना काफी महंगा पड़ेगा हम तो यही कहेगे की थोड़ी मात्रा में जैविक खाद सभी खेतों में प्रयोग करें।

निवेदन

समस्या-समाधान स्तंभ में पाठकों से निवेदन है कि अपनी खेती-किसानी संबंधी समस्या कृषि विशेषज्ञों से निराकरण करने हेतु वाट्सएप पर भेजें. एक बार में केवल एक प्रमुख समस्या ही वाट्सएप पर लिखकर भेजें. वाट्सएप हेल्पलाइन नं. 6262166222.

समस्या-समाधान

कृषक जगत 14, इंदिरा प्रेस काम्प्लेक्स, महाराणा प्रताप नगर, भोपाल (म.प्र.)
फोन-0755-4248100,2554864

स्वास्थ्य/शिक्षण

सर्दियों में स्वस्थ रहने के सूत्र

सर्दियों को स्वास्थ्य के लिहाज से बहुत अनुकूल मौसम माना जाता है। इस सीजन में पाचन शक्ति काफी मजबूत रहती है, भूख बढ़ती है, संक्रमण फैलाने वाले वायरस निष्क्रिय हो जाते हैं तथा व्यक्ति तुलनात्मक रुप से अधिक स्वस्थ रहता हैं लेकिन सर्दियां हृदय, अस्थमा, जोड़-हड्डी तथा एलर्जी के रोगियों के लिये कई चुनौतियां पैदा करती है जिनका इस मौसम में खास ध्यान रखने की जरुरत होती है। सर्दियों में रक्त धमनियां सिकुड़ने के कारण सर्वाधिक हृदयघात होते हैं। सर्दी को सबसे अधिक स्वास्थ्यकारी मौसम कहा जाता है। यहां सर्दियों में स्वस्थ रहने के सात नुस्खे दिये जा रहे है जिनका अनुसरण कर शरद ऋतु का पर्याप्त आनन्द लिया जा सकता है।

वार्म ड्रेसअप – इस मौसम में कभी सर्दी कम तो कभी ज्यादा होती है। इस लिये कपड़े पहनने में लापरवाही न करें। सर्दी कम रहने पर भी गर्म कपड़े से परहेज न करें। सिर, हाथ तथा पैरों को कवर करने का खास ख्याल रखें क्योंकि शरीर में ठण्ड का प्रकोप सबसे पहले सिर, पैर, नाक,छाती व कान से शुरू होता है।

गरम भोजन व पेय – भारतीय परम्पराओं व रीति-रिवाजों में मौसम के हिसाब से खान-पान निर्देशित है। सर्दियों में शीतल पेय, आइसक्रीम, दही की लस्सी आदि ठण्डे पदार्थों को सेवन पूरी तरह से त्यागना चाहिए। इसके स्थान पर कॉफी, दूध, छाछ, सूप, हलवा आदि ऊर्जावान खाद्य व पेय पदार्थों का सेवन करें।

लहसुन एक औषधीय पदार्थ है– जिसके प्रयोग से छोटी-बड़ी बीमारी में लाभ होता है। लहसुन का नियमित सेवन हृदय व एलर्जी के रोगियों के लिये अमृत समान लाभकारी है। लहसुन में पाया जाने वाला सल्फाइड्स रक्तचाप कम करने में मदद करता है। लहसुन वायरस और बैक्टीरिया से लड़ने के लिये भी ऊर्जा प्रदान करता है। इसके एंटीबैक्टीरियल गुण इन्फेक्शन से लड़ने में मदद करते हैं। यह सर्दी, जुकाम और कफ समस्या का कारगर इलाज है। यह एक चमत्कारिक गुणों वाली औषधि है। सर्दियों में मेथी दाने का नियमित इस्तेमाल अस्थमा, गठिया, एसिडिटी, कफ आदि की कारगर औषधि है। मेथी रक्त ग्लूकोज और कॉलेस्ट्रॉल की मात्रा को नियंत्रित करती है। डायबिटीज रोगियों के लिए बहुत ही लाभकारक माना गया है।

मदिरा से परहेज – कुछ लोग सर्दी से बचने के लिये मदिरा का सहारा लेते हैं लेकिन ध्यान रखें कि मदिरा पी कर कभी भी बाहर नहीं घूमना चाहिए। मदिरा से शरीर में गरमाहट आती है परन्तु खुले में घूमने पर शरीर का तापमान असामान्य हो सकता है जो किसी बड़े स्ट्रोक का कारण बन सकता है।

नियमित शरीर की सफाई – सर्दियों में लोग नहाने से बचते हैं। पानी से दूरी बनाये रखते हैं। जबकि इस मौसम में गुनगुने पानी से हर दिन स्नान करना चाहिए। इससे हमारा इम्यून सिस्टम मजबूत रहता है। सर्दियों में शरीर की उपरी त्वचा का तापमान ठण्डा व अन्दरुनी गरम रहता है। सर्दियों में रक्त धमनियां सिकुड़ जाती हैं। स्नान से त्वचा चेतन होती है तथा बैक्टीरिया से मुक्ति मिलती है। गर्म पानी में तुलसी के पत्ते, अजवायन, मेथी आदि पका कर स्नान करने से त्वचा खुश्क व मुरझाती नहीं हैं।

खुली हवा से बचें– सर्दियों की हवा में नमी का प्रवाह रहता है। ठण्डी हवा के संपर्क में आने से छाती का जल कफ के रुप में जम जाता है। इससे छाती, गले तथा नाशिका में संक्रमण फैलता है। जिसे जुकाम व नजला कहते हैं। इसके कारण बुखार, निमोनिया तथा खांसी हो जाती है। इससे बचने के लिसे जरुरी है कि खुली हवा के सम्पर्क में आने से जितना बचा जाये उतना ही अच्छा है।

व्यायाम करें, चुस्त रहें – सर्दियों में निष्क्रियता सबसे खतरनाक होती है। इस मौसम में खूब शारीरिक परिश्रम करना चाहिए तथा नियमित व्यायाम करें। इससे शरीर की रोग प्रतिरोधात्मक शक्ति का विकास होता है तथा वातावरण में फैले बैक्टीरिया से लड़ने की शक्ति मिलती है। सर्दियों में अधिकांश लोग घरों के अन्दर दुबक कर बैठे रहते हैं जिससे उनको भोजन पचाने में कठिनाई हो सकती है। यही नहीं इस मौसम में सर्वाधिक गरिष्ठ पदार्थों का सेवन किया जाता है जिसके कारण पेट बाहर आ जाता है।

धूप का भरपूर आनन्द लें – सर्दियों की धूप वैसे भी काफी सुहावनी लगती है। धूप से विटामिन डी भरपूर मात्रा में मिलता है जो त्वचा के लिये सबसे अनुकूल आहार है। धूप से सुस्त पड़ी त्वचा को ऊर्जावान आहार मिलता है। इस लिये सुबह उगते सूर्य की किरणों का भरपूर आनन्द लेना नहीं भूलें।

इससे जहां मन को सुकून मिलता है वहीं शरीर को प्राकृतिक ऊर्जा मिलती है। रोग प्रतिरोधात्मक शक्ति बढ़ती है। सर्दियों में अधिक समय तक अंधेरे में नहीं रहना चाहिए। इससे हमारा इम्यून सिस्टम बिगड़ सकता है।

दिल की हिफाजत के लिए विशेषज्ञों के टिप्स

यह एक आश्चर्य जनक तथ्य है कि पिछले कुछ दशकों में कोरोनरी हार्ट बीमारी भारत में एक महामारी की तरह फैली है। एक अनुमान के मुताबिक आज की तारीख में भारतवर्ष में लगभग 3 से 5 करोड़ लोग दिल की बीमारियों के शिकार है और जिनकी गिनती में प्रतिदिन बढ़ोत्तरी हो रही है। नई दिल्ली स्थित साओल हार्ट सेंटर के निदेशक डॉ. बिमल छाजेड़ का कहना है कि हृदय धमनियों में पैदा होने वाले अवरोध की स्थिति को जीवन शैली में बदलाव तथा हृदय रोग से संबंधित सभी खतरनाक कारकों को नियंत्रित कर पलटा जा सकता है। ऐसा करके आप न सिर्फ बाई पास सर्जरी या एंजीयोप्लास्टी से बच सकते हैं, बल्कि इन सर्जरियों के बाद फिर से धमनियों में रूकावट पैदा होने की संभावना को भी खत्म करवा सकते हैं। यहां उन दस उपायों से अवगत करा रहे हैं, ताकि हृदय की बीमारियों को रोका जा सके–

अपने कोलेस्ट्रोल स्तर को 130 एमजी/डीएल तक रखिये– कोलेस्ट्रोल के मुख्य स्रोत जीव उत्पाद हैं, जिनसे जितना अधिक हो बचने की कोशिश करें। अगर आपके यकृत यानी लीवर में अतिरिक्त कोलेस्ट्रोल का निर्माण हो रहा हो, तब आप को कोलेस्ट्रोल घटाने वाली दवाओं का सेवन करना पड़ सकता है।

भोजन बगैर तेल के बनाये, लेकिन मसाले का प्रयोग बंद नहीं करें– मसाले हमें भोजन का स्वाद देते हैं न कि तेल का। हमारे 'जीरो ऑयल' भोजन निर्माण विधि का प्रयोग करें और हजारों हजार जीरो ऑयल भोजन स्वाद के साथ समझौता किये बगैर तैयर करें। तेल ट्रिगलिराइडस होते हैं और रक्त स्तर 130 एमजी 1 डीएल के नीचे रखा जाना चाहिए।

तनावों को कम करें– इससे आप को हृदय रोग को रोकने में मदद मिलेगी क्योंकि मनोवैज्ञानिक तनाव हृदय की बीमारियों की मुख्य वजह हैं। इससे आप को बेहतर जीवन स्तर बनाये रखने में भी मदद मिलेगी।

हमेशा ही रक्त दबाव को 120/ 80 एमएमएचजी के आसपास रखें – बढ़ा हुआ रक्त दबाव विशेष रूप से 130/90 से ऊपर आपके ब्लॉकेज (अवरोध) को दुगनी रफ्तार से बढ़ायेगा। तनाव में कमी, ध्यान, नमक में कमी तथा यहां तक कि हल्की दवाएं लेकर भी रक्त दबाव को कम करें।

अपने वजन को सामान्य रखें– आप का बॉडी मास इंडेक्स (बीएमआई) को 25 से नीचे रहना चाहिए। इसकी गणना आप अपने किलोग्राम वजन को मीटर में अपने कद के स्ववायर के साथ घटाकर कर सकते है। तेल

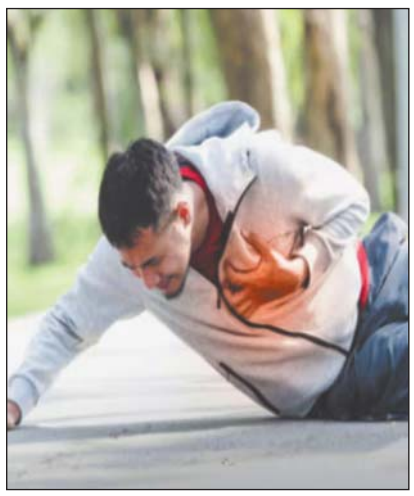

नहीं खाकर एवं निम्न रेसे वाले अनाजों तथा उच्च किस्म के सलादों के सेवन द्वारा आप अपने वजन को नियंत्रित कर सकते हैं।

टहलना जरूरी– टहलने की रफ्तार इतनी होनी चाहिए जिससे सीने में दर्द नहीं हो और हांफे भी नहीं। यह आप के अच्छे कोलेस्ट्रोल यानी एचडीएल कोलेस्ट्रोल को बढ़ाने में आपकी मदद कर सकता है।

हल्के योग व्यायाम करें– यह आपके तनाव, तथा रक्त दबाव को कम करेगा। आपको सक्रिय रखेगा और आपके हृदय रोग को नियंत्रित करने में मददगार साबित होगा।

भोजन में रेसे और एंटी ऑक्सीडेन्ट्स– भोजन में अधिक सलाद, सब्जियों तथा फलों का प्रयोग करें। ये आपके भोजन में रेसे और एंटी ऑक्सीडेन्ट्स के स्रोत हैं और एचडीएल या गुड कोलेस्टरोल को बढ़ाने में सहायक होते हैं।

हार्ट अटैक से पूरी तरह बचाव – डॉ. बिमल छाजेड़ के अनुसार हार्ट अटैक से बचने का सबसे आसान संदेश है ''और अधिक रूकावटें न होने दें। यदि आप इन्हें घटा सकते हैं, तो हार्ट अटैक कभी नहीं होगा।'' यह कुछ ऐसा है, जैसे कि नोटों के बंडल के ऊपर रबर बैंड की सुरक्षा। यदि आप रबर बैंड में ज्यादा से ज्यादा नोट डालते ही जाएंगे, तो एक दिन ऐसा होगा जब रबर बैंड टूट जाएगा। यही परिस्थिति हार्ट अटैक की भी होती है, जहां झिल्ली टूट जाती है। अब यदि आप और नोट डालना बंद कर देंगे तो रबर नहीं टूटेगा। इसके आगे यदि आप हर रोज इस बंडल में से एक-दो नोट निकालते रहेंगे तो भी रबर बैंड कभी नहीं टूटेगा। यही नियम हार्ट अटैक से बचाव में भी लागू होता है। पर्याप्त रूप से हृदय की बीमारियां पैदा करने वाले कारकों को नियंत्रित करके हार्ट अटैक से बचा जा सकता है।

पानी प्रयोग की विधि क्या

सिरदर्द, उच्च रक्तचाप, खून की कमी, मोटापा, बेहोशी, दमा, खांसी, लीवर की कमजोरी, पेशाब की बीमारी, गैस, कब्ज, एसीडिटी, कमजोरी, आंख की बीमारी, मानसिक रोग, महिलाओं को होने वाली बीमारियां एवं शरीर में उत्पन्न होने वाली कई नई-पुरानी व्याधियों को दूर करने के लिए यह सादी-सरल विधि है। भारत जैसे गरीब देश के लिए तो यह विधि बिना पैसा खर्च की चमत्कारी पद्धति सिद्ध हो सकती है। कमी है तो बस इसके जनसाधारण के बीच प्रसार की। सुबह उठकर बिस्तर में बैठ जाएं और चार बड़े ग्लास भरकर (लगभग एक लीटर) पानी एक ही समय एक साथ पी जाएं। ध्यान रहे कि पानी पीने के पहले मुंह न धोएं, न ब्रश करें तथा शौचकर्म भी न करें। पानी पीने के बाद थूकें नहीं। पानी पीने के पौन घंटे बाद आप ब्रश/ दातून, मुंह धोना, शौचकर्म इत्यादि नित्यकर्म कर सकते हैं। जो व्यक्ति बीमार या कमजोर काया के हैं और वे एक साथ चार ग्लास पानी नहीं पी सकते तो उन्हें शुरूआत एक-दो ग्लास पानी से करना चाहिए तथा धीरे-धीरे चार ग्लास तक बढ़ाना चाहिए।

पाक्षिक पंचांग

8 से 21 दिसम्बर 2025
विक्रम संवत् 2082
पौष कृष्ण 4 से पौष शुक्ल 1 तक

दि.	माह	वार		तिथि/त्यौहार
08	दिसम्बर	सोम	पौष कृष्ण 4	गणेश चतुर्थी व्रत
09	दिसम्बर	मंगल	---------- 5	
10	दिसम्बर	बुध	---------- 6	
11	दिसम्बर	गुरु	---------- 7	
12	दिसम्बर	शुक्र	---------- 8	रुक्मणी अष्टमी
13	दिसम्बर	शनि	---------- 9	
14	दिसम्बर	रवि	---------- 10	
15	दिसम्बर	सोम	---------- 11	सफला एकादशी
16	दिसम्बर	मंगल	---------- 12	खरमास प्रारंभ
17	दिसम्बर	बुध	---------- 13	प्रदोष व्रत
18	दिसम्बर	गुरु	---------- 14	शिव चतुर्थी व्रत
19	दिसम्बर	शुक्र	---------- 30	अमावस
20	दिसम्बर	शनि	पौष शुक्ल 1	
21	दिसम्बर	रवि	---------- 1	

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

आरबीआई अधिकारियों ने किया कृषि अनुसंधान भवनों का अवलोकन

रायपुर। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई), रायपुर के अधिकारियों ने इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय परिसर में कृषि महाविद्यालय रायपुर में संचालित अनुसंधान अधोसंरचनाओं एवं प्रक्षेत्र का भ्रमण किया। इस प्रतिनिधिमंडल में भारतीय रिजर्व बैंक, छत्तीसगढ़ की क्षेत्रीय निदेशक श्रीमती रीनी अजित सहित, भारतीय रिजर्व बैंक, रायपुर से श्री अमितेश सिंह (एजीएम, एचआरएमडी), श्री दीपेश तिवारी (एजीएम, एफआईडीडी), श्री नवीन मिंज (एजीएम, डीओएस), श्री जोस सरोज गुड़िया (एजीएम, राजभाषा सेल), श्री सत्येंद्र कुमार राठौड़ (एजीएम, एफआईडीडी), अविनाश कुमार चौधरी (एजीएम, सिविल, एस्टेट सेल) आदि प्रमुख अधिकारी मौजूद थे।

भ्रमण कार्यक्रम में विश्वविद्यालय की अत्याधुनिक अनुसंधान सुविधाओं का अवलोकन किया गया। यह पहल छत्तीसगढ़ के कृषि क्षेत्र में प्राथमिकता क्षेत्र ऋणों के नियमन एवं वित्तीय जागरूकता को बढ़ावा देने पर केंद्रित थी। प्रशासनिक भवन में पारंपरिक स्वागत के बाद इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. गिरीश चंदेल के साथ बैठक आयोजित हुई। इसमें विश्वविद्यालय की अनुसंधान और विस्तार कार्यक्रमों पर गहन विचार-विमर्श हुआ।

आरबीआई अधिकारियों ने औषधीय उद्यान, टिश्यू कल्चर प्रयोगशाला, रिछारिया अनुसंधान प्रयोगशाला, कृषि संग्रहालय, जैव नियंत्रण एवं जैव उर्वरक प्रयोगशाला तथा इनक्यूबेशन सेंटर का विस्तृत अवलोकन किया। कुलपति डॉ. गिरीश चंदेल पूरे भ्रमण के दौरान आरबीआई अधिकारियों के साथ उपस्थित रहते हुए कार्यक्रम का नेतृत्व एवं मार्गदर्शन देते रहे।

कृषि महाविद्यालय के डॉ. पी.एस. जोशी (प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग), डॉ. जेनू झा (प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, पादप संरक्षण एवं जीवाणुविज्ञान विभाग) एवं डॉ. आर.पी. कुजूर (सहायक प्राध्यापक) ने कार्यक्रम का पूर्ण समन्वय किया। सभी प्रयोगशाला प्रभारियों ने भ्रमण के दौरान अपने-अपने प्रयोगशालाओं के कार्यों का उत्साहपूर्वक विस्तार से परिचय कराया एवं छत्तीसगढ़ के कृषि अनुसंधान की उत्कृष्ट झलक प्रस्तुत की। आरबीआई टीम ने भ्रमण के दौरान चावल की जैव विविधता एवं कृषि उत्पादों के विपणन के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त की।

सफलता की कहानी

रासायनिक नहीं प्राकृतिक खेती ने तुलसीराम को दी नई पहचान

रायपुर। नेशनल मिशन ऑन नेचुरल फार्मिंग के विस्तार से उन्हें नई दिशा मिली किसान तुलसीराम मौर्य। मिशन के तहत प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद तुलसीराम ने श्री विधि से कुटकी, कोसरा और रागी की खेती शुरू की। नई तकनीक और प्राकृतिक तरीकों ने उनके खेतों में नई जान डाल दी। उत्पादन बढ़ा, मिट्टी की गुणवत्ता सुधरी और रासायनिक उर्वरक तथा कीटनाशकों का उपयोग पूरी तरह बंद हो गया।

खेती की लागत में काफी आई, कमी जैविक उत्पाद का बेहतर मूल्य मिल रहा है

किसान तुलसीराम मौर्य जो दंतेवाड़ा जिले के गीदम विकासखंड के ग्राम छिंदनार (बड़े पारा) निवासी हैं आज प्राकृतिक खेती के सफल उद्यमी बनकर क्षेत्र के लिए प्रेरणा बने हुए हैं। पहले वे परंपरागत खेती में अधिक खर्च और कम उत्पादन से परेशान रहते थे। रासायनिक खादों के अत्यधिक उपयोग के कारण मिट्टी की ताकत भी लगातार घट रही थी। इसी दौरान उन्होंने गोबर खाद, जीवामृत और नीम-लहसुन आधारित जैविक घोल का प्रयोग शुरू किया, जिससे खेती की लागत में काफी कमी आई। साथ ही प्राकृतिक तरीके से उगाई गई सब्जियों में भिंडी, करेला, लौकी, टमाटर, मिर्च आदि से उन्हें रोजाना आय होने लगा। बाजार में उनकी उपज को जैविक उत्पाद होने के कारण बेहतर मूल्य भी मिलता है।

ऑनलाइन मार्केटिंग प्लेटफॉर्म तैयार करने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं

तुलसीराम की सफलता देखकर गांव के 20 से अधिक किसान भी श्री विधि और प्राकृतिक खेती अपनाने लगे हैं। गांव की महिलाएं भी जैविक घोल तैयार करने में सक्रिय होकर आजीविका से जुड़ रही हैं। उत्कृष्ट कार्य के लिए कृषि विभाग द्वारा तुलसीराम मौर्य को आदर्श कृषक सम्मान भी दिया गया है। अपने भविष्य की योजनाओं को साझा करते हुए वे बताते हैं कि अब वे 5 एकड़ क्षेत्र को पूर्णत जैविक खेती क्षेत्र में विकसित करने के साथ-साथ जैविक अनाज प्रोसेसिंग यूनिट और ऑनलाइन मार्केटिंग प्लेटफॉर्म तैयार करने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं।

कृषक जगत जिला प्रतिनिधि

कृषक जगत की वार्षिक सदस्यता, विज्ञापन, समाचार, कृषि पुस्तकें एवं कृषि डायरी हेतु संपर्क करें-

उत्तम कुमार देशमुख
(जिला प्रतिनिधि)
नावेल्टी न्यूज एजेंसी
ग्राम निकुंम, जिला दुर्ग (छ.ग.)
मो. : 8236059865

कृषक जगत जिला प्रतिनिधि

कृषक जगत की वार्षिक सदस्यता, छोटे-बड़े विज्ञापन, कृषि समाचार, कृषि लेख, कृषि पुस्तकें एवं कृषि डायरी हेतु संपर्क करें-

बलभद्र शर्मा
डागा चौक वार्ड नं. 10, खरियार रोड, नुआपाड़ा (उड़ीसा)
पिन नं. 766104
मो. : 6371774361

छोटा विज्ञापन बड़ा लाभ

व्यक्तिगत क्लासीफाइड

विज्ञापन के लिए निर्धारित कैटेगरीज-
- बेचना/खरीदना- ट्रैक्टर, ट्राली, थ्रेशर, खेत, मकान, मोटरसाइकल, पशु, मोटर, जनरेटर आदि
- बीज ▪ औषधीय फसल

विज्ञापन दर - मात्र रु. 600/- प्रति संस्करण लगातार 4 सप्ताह तक
- अधिकतम 25 शब्द
- अतिरिक्त शब्द- 2 रु. प्रति शब्द, अधिकतम 40 शब्दों तक

डिस्प्ले क्लासीफाइड

विज्ञापन दर : रु. 800/- प्रति अंक, प्रति संस्करण
साइज : फिक्स साइज- 8 × 5 = 40 वर्ग से.मी.

कैटेगरीज- बीज, कीटनाशक, जैविक खाद, ट्रेवल्स, तीर्थ यात्रायें, आवश्यकता, ऑटोमोबाइल पार्ट्स, कृषि सेवा केन्द्र, शिक्षण संस्थाएं, प्रशिक्षण, बारदाने, कोल्ड स्टोरेज, गोदाम, होस्टल, वित्तीय संस्थाएं, चिकित्सक, एग्री क्लीनिक आदि।

कृषक जगत
की सदस्यता एवं विज्ञापन के लिए हेल्पलाइन नं.
(सोमवार से शनिवार प्रातः 9 बजे से शाम 7 बजे तक)
62 62 166 222
www.krishakjagat.org @krishakjagat
@krishakjagatindia @krishak_jagat

78 वर्ष
कृषक जगत
राष्ट्रीय कृषि अखबार
भोपाल-जयपुर-रायपुर

वर्ष में कई आकर्षक एवं संग्रहणीय विशेषांक
- खरीफ विशेषांक
- पौध संरक्षण विशेषांक
- रबी विशेषांक
- बीज विशेषांक
- बागवानी विशेषांक

25 लाख पाठक

कृषक जगत की सदस्यता राशि
⇨ वार्षिक रु. 600/- ⇨ दो वर्ष रु. 1000/-
⇨ तीन वर्ष रु. 1500/-

डाक से नियमित रूप से 'कृषक जगत' – प्रति सप्ताह ☐ भोपाल ☐ जयपुर ☐ रायपुर संस्करण निम्न पते पर एक वर्ष/दो वर्ष / तीन वर्ष भेजें. (अपनी आवश्यकता के अनुरूप निशान लगायें).

नाम .....
.....
ग्राम .....पो. .....
डाक वितरण हेतु अपने क्षेत्रीय पोस्टमैन का मो. नं. अवश्य दें : .....
वि.ख. ..... तह. .....
जिला ..... पिन ☐☐☐☐☐☐ राज्य .....
शिक्षा ..... भूमि ..... उम्र .....
ट्रैक्टर/मॉडल ..... फोन/मो. .....
ई-मेल .....
मेरा सदस्यता शुल्क रुपये ..... नगद/डिमांड ड्राफ्ट/UPI/Bank/
मनीऑर्डर/क्र. ..... 'कृषक जगत' भोपाल के नाम संलग्न है।

कृषक जगत में सदस्यता लेने के माध्यम
कृषक जगत ऑनलाइन पेमेंट लिंक
http://www.krishakjagat.org/krishak-jagat-subscription/index.php
Online Payment- SBI-A/C No. 53007193070, IFSC : SBIN 0005793, Google Pay/Phone Pe/PAYTM/UPI : Mobile 9826255861
कृषक जगत हेल्पलाइन नम्बर 6262166222

पेमेंट के बाद : 1. पेमेंट का स्क्रीनशॉट भेजें इस फोन नम्बर पर 9826255861
2. पूरा नाम, पता पिन कोड के साथ भेजें।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
प्रसार प्रबंधक कृषक जगत

भोपाल : 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल-462011 फोन: 0755-4248100, मो. : 9926653355, 9826255861, E-mail-info@krishakjagat.org
जयपुर : एच-64, मीरा मार्ग, बनी पार्क, जयपुर (राज.), मो. : 9829254092, 7387422952
रायपुर : एलआईजी-5, सेक्टर-2, शंकर नगर, रायपुर (छ.ग.),मो.: 9826255862
इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास इंदौर, मो. : 9826021837, 9826024864
नई दिल्ली : 403,आईएनएस बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली, मो. : 7387422952

सदस्यता शुल्क भुगतान के लिए QR कोड स्कैन करें

मुख्यमंत्री ऊर्जा राहत जन अभियान से उपभोक्ताओं को मिल रहा लाभ

रायपुर। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय की अध्यक्षता में मंत्रालयमें आयोजित कैबिनेट की बैठक में राज्य के घरेलू विद्युत उपभोक्ताओं को बिजली बिल में रियायत देने के साथ ही अन्य महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए जिसके तहत मुख्यमंत्री ऊर्जा राहत जन अभियान (M-URJA) - राज्य के घरेलू विद्युत उपभोक्ताओं को बिजली बिल में राहत देने के लिए मुख्यमंत्री ऊर्जा राहत जन अभियान राज्य में 01 दिसम्बर 2025 से लागू है, जिसके तहत घरेलू विद्युत उपभोक्ताओं को 100 यूनिट से बढ़ाकर अब 200 यूनिट प्रति माह तक बिजली बिल में 50 प्रतिशत छूट का लाभ मिलेगा। यह लाभ 400 यूनिट तक खपत वाले उपभोक्ताओं को भी मिलेगा।

राज्य में 200 से 400 यूनिट तक बिजली खपत करने वाले उपभोक्ताओं को अगले एक वर्ष तक 200 यूनिट तक, बिजली बिल में 50 प्रतिशत छूट का लाभ मिलेगा, इससे 6 लाख उपभोक्ता लाभान्वित होंगे, ताकि इस

मंत्रिपरिषद के निर्णय

अवधि में वे अपने घरों में पीएम सूर्यघर मुफ्त बिजली योजना के तहत सोलर प्लांट स्थापित करा सके। इस तरह मुख्यमंत्री ऊर्जा राहत जन अभियान से प्रदेश के 42 लाख उपभोक्ता लाभान्वित होंगे, वहीं प्रधानमंत्री सूर्य घर मुक्त बिजली योजना का लाभ प्रदेश के सभी उपभोक्ताओं को मिलेगा।

गौरतलब है कि पीएम सूर्यघर मुफ्त बिजली योजना के अंतर्गत राज्य शासन की ओर से सब्सिडी दी जा रही है, जिसके तहत 1 किलोवॉट क्षमता के सोलर प्लांट पर 15,000 रुपये तथा 2 किलोवॉट या उससे अधिक क्षमता के प्लांट पर 30,000 रुपये की अतिरिक्त सब्सिडी दी जा रही है। यह व्यवस्था राज्य में सौर ऊर्जा अपनाने को प्रोत्साहित करेगी और आने वाले समय में उपभोक्ताओं को हाफ बिजली से फ्री बिजली की ओर ले जाएगी।

छत्तीसगढ़ भण्डार क्रय नियम, 2002 में स्थानीय लघु एवं सूक्ष्म उद्योगों से क्रय को प्रोत्साहन देने तथा जेम पोर्टल में क्रय की स्पष्टता के लिए संशोधन किए जाने का निर्णय लिया गया। इन संशोधन से क्रय प्रक्रिया का सरलीकरण होगा, पारदर्शिता में वृद्धि होगी, प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा मिलेगा तथा समय और संसाधनों की बचत होगी।

राजभवन अब 'लोकभवन'

रायपुर। छत्तीसगढ़ राजभवन अब ''लोकभवन'' के नाम से जाना जाएगा। गृह मंत्रालय भारत सरकार द्वारा जारी पत्र के अनुसार राज्यपाल के सचिव डॉ.सी.आर प्रसन्ना ने राजभवन का नाम परिवर्तित कर लोकभवन करने का आदेश जारी कर दिया है।

एसबीआई जनरल इंश्योरेंस ने

रबी में किसान जागरूकता बढ़ाने फसल बीमा सप्ताह में चलाया अभियान

मुंबई (कृषक जगत)। एसबीआई जनरल इंश्योरेंस, देश की अग्रणी सामान्य बीमा कंपनियों में से एक, कृषि मंत्रालय, भारत सरकार के साथ मिलकर प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (PMFBY) के तहत आयोजित फसल बीमा सप्ताह में सक्रिय रूप से भाग ले रहा है। इस सप्ताहभर चलने वाले अभियान का उद्देश्य किसानों में फसल बीमा के महत्व के प्रति समझ विकसित करना और उन्हें योजना के प्रावधानों, लाभों और प्रक्रियाओं के बारे में सरल एवं व्यवहारिक जानकारी उपलब्ध कराना है।

कंपनी द्वारा मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, आंध्र प्रदेश, ओड़िशा, असम और तमिलनाडु के आवंटित जिलों में व्यापक जन-जागरूकता गतिविधियाँ आयोजित की जा रही हैं। इनमें फसल बीमा पाठशालाएँ, किसान कार्यशालाएँ, किसान मेले, और विशेष रूप से महिला किसानों के लिए नामांकन-आधारित संवाद कार्यक्रम शामिल हैं।

SBI general INSURANCE
SURAKSHA AUR BHAROSA DONO

किसानों तक अधिक प्रभावी ढंग से पहुँच बनाने के लिए एसबीआई जनरल इंश्योरेंस द्वारा डोर-टू-डोर जागरूकता अभियान, स्कूल-कॉलेजों में शिक्षण कार्यक्रम, बाइक रैली, नाव आधारित जनसंपर्क, नुक्कड़ नाटक और सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ भी आयोजित की जाएंगी। गांव, ब्लॉक और जिला स्तर पर होर्डिंग, बैनर, पोस्टर, पंपलेट एवं एफएक्यू सामग्री के वितरण के माध्यम से व्यापक प्रचार-प्रसार किया जाएगा।

इस पहल पर श्री नवीन चंद्र झा, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, एसबीआई जनरल इंश्योरेंस, ने कहा—

'फसल बीमा सप्ताह हमारे लिए किसानों से सीधे जुड़ने, योजना को सरल भाषा में समझाने और उन्हें उपलब्ध सुरक्षा कवच के बारे में जागरूक करने का सशक्त अवसर है। सरकारी संस्थाओं के साथ मिलकर हम यह सुनिश्चित करते हैं कि योजना का नामांकन सुचारु रहे और कार्यान्वयन प्रभावी ढंग से हो।' रबी 2025-26 के किसानों तक योजना के लाभ, प्रावधान और बीमा सुरक्षा की जानकारी अधिकाधिक पहुँचाना इस अभियान का मुख्य लक्ष्य है।

रबी फसलों की बुवाई में तेजी : कुल रकबा 393 लाख हेक्टेयर के पार

गेहूं में रिकॉर्ड 17% की बढ़त

नई दिल्ली (कृषक जगत)। कृषि मंत्रालय ने गत 28 नवंबर 2025 तक हुई रबी फसलों की बुवाई के ताजा आंकड़े जारी किए हैं। आंकड़ों के अनुसार, इस वर्ष कुल रबी फसलों की बुवाई 393.07 लाख हेक्टेयर में हुई, जो पिछले वर्ष 357.73 लाख हेक्टेयर थी। इसका मतलब है कि 2025-26 में कुल बुवाई क्षेत्र में 35.33 लाख हेक्टेयर की बढ़ोतरी हुई है।

प्रमुख रबी फसलों की बुवाई
28 नवम्बर 2025 की स्थिति (लाख हे. में)

फसल	सामान्य क्षेत्र	बुवाई 2025-26	बुवाई 2024-25
गेहूँ	**312.35**	**187.37**	**160.26**
चावल	**42.93**	**9.1**	**8.45**
दालें	**140.42**	**87.01**	**85.06**
चना	100.99	62.49	60.13
मसूर	15.13	11.42	10.44
मोटे अनाज	**55.33**	**29.06**	**26.58**
ज्वार	24.62	14.98	14.43
मक्का	23.61	8.76	7.25
तिलहन	**86.78**	**80.53**	**77.38**
सरसों	79.17	77.06	72.92
मूंगफली	3.69	1.35	1.94
अलसी	1.93	1.15	1.79
कुल	**637.81**	**393.07**	**357.73**

नोट : कुल क्षेत्रफल के आंकड़े चार्ट से अलग हैं, क्योंकि सभी फसलों को चार्ट में शामिल नहीं किया गया है।
स्त्रोत : कृषि मंत्रालय

गेहूं और चावल- गेहूं की बुवाई में सबसे अधिक बढ़त देखने को मिली है। इस वर्ष 187.37 लाख हेक्टेयर में गेहूं बोया गया, जबकि पिछले वर्ष यह आंकड़ा 160.26 लाख हेक्टेयर था, यानी 27.11 लाख हेक्टेयर की वृद्धि। वहीं, चावल की बुवाई भी बढ़कर 9.10 लाख हेक्टेयर हो गई, जो पिछले वर्ष 8.45 लाख हेक्टेयर थी।

दालें- दालों की कुल बुवाई इस वर्ष 87.01 लाख हेक्टेयर रही, जो पिछले वर्ष 85.06 लाख हेक्टेयर थी। इसमें मुख्य रूप से चने की बुवाई 62.49 लाख हेक्टेयर तक बढ़ी, मसूर 11.42 लाख हेक्टेयर, जबकि मटर और कुलथी की दाल में हल्की कमी दर्ज की गई। उड़द और मूंग की बुवाई में मामूली बढ़त हुई है।

श्री अन्न एवं मोटे अनाज-श्री अन्न और मोटे अनाज की कुल बुवाई 29.06 लाख हेक्टेयर रही। इसमें ज्वार 14.98 लाख हेक्टेयर, मक्का 8.76 लाख हेक्टेयर और जौ 4.60 लाख हेक्टेयर बोया गया। छोटे बाजरे और रागी में मामूली बढ़ोतरी हुई है।

तिलहन- तिलहन की कुल बुवाई में भी वृद्धि दर्ज की गई है। इस वर्ष 80.53 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में तिलहन बोया गया, जो पिछले वर्ष 77.38 लाख हेक्टेयर था। इसमें मुख्य रूप से रेपसीड और सरसों की बुवाई में 4.14 लाख हेक्टेयर की बढ़त हुई। इसके अलावा कुसुम और सूरजमुखी में भी बढ़ोतरी रही, जबकि मूंगफली और अलसी की बुवाई में कुछ कमी आई।

कृषक जगत
Registered Postal Regn. No.MP/Bhopal/4-150/2023-25 RNI No.-CHHHIN/2002/10910
Post Bag No. 37,BHOPAL-462011
रायपुर, 8 दिसम्बर 2025 डाक प्रेषण का दिन - मंगलवार, बुधवार

केंद्रीय कृषि मंत्री की अध्यक्षता में राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड की 33वीं बैठक

छोटे किसानों को मिलें ज्यादा से ज्यादा लाभ, उनकी आय भी बढ़े : श्री चौहान

नई दिल्ली (कृषक जगत)। केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान की अध्यक्षता में कृषि भवन, नई दिल्ली में राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड के निदेशक मंडल की 33वीं बैठक आयोजित हुई। बैठक में केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री श्री रामनाथ ठाकुर भी उपस्थित थे। फ्लैगशिप कार्यक्रमों की समीक्षा और रणनीति निर्धारण-बैठक में श्री शिवराज सिंह चौहान ने NHB की योजनाओं की समीक्षा की। विशेष रूप से वाणिज्यिक बागवानी विकास योजनाएं, कोल्ड-चेन अवसंरचना परियोजनाएं, क्लस्टर विकास कार्यक्रम (CDP)-क्षेत्र-विशिष्ट बागवानी क्लस्टरों के माध्यम से उत्पादकता और बाजार जुड़ाव को बढ़ाने की नई पहल, क्लीन प्लांट कार्यक्रम-उच्च मूल्य वाली फसलों के लिए रोग-मुक्त पौध सामग्री उपलब्ध कराने के बारे में चर्चा हुई।

श्री चौहान ने निर्देश दिया कि योजनाओं का क्रियान्वयन समयबद्ध, पारदर्शी और किसान-केंद्रित हो तथा किसानों को सब्सिडी भी समय पर दी जाएं, इस संबंध में कोई शिकायत नहीं आनी चाहिए। साथ ही, श्री शिवराज सिंह ने किसानों के हित में, जल्दी खराब होने वाले बागवानी उत्पादों के संबंध में विशेष रणनीति बनाने पर जोर दिया, ताकि इनकी सेल्फ लाइफ बढ़े, किसानों को नुकसान नहीं हो और नुकसान से बचने के लिए अवेयरनेस प्रोग्राम भी चलाए जाएं।

एनएचबी की भूमिका सुदृढ़ करने के लिए मार्गदर्शन- बैठक के दौरान केंद्रीय मंत्री श्री चौहान ने बागवानी क्षेत्र की उत्पादकता, गुणवत्ता और प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने हेतु कई रणनीतिक सुझाव दिए। बैठक में केंद्रीय कृषि सचिव डॉ. देवेश चतुर्वेदी, आईसीएआर के महानिदेशक डॉ. मांगीलाल जाट सहित कृषि, विभिन्न विभागों के वरिष्ठ अधिकारी, बागवानी उद्योग से जुड़े गैर-आधिकारिक सदस्य उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव से छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने भोपाल प्रवास के दौरान समत्व भवन, मुख्यमंत्री निवास में सौजन्य भेंट की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने श्री विष्णु साय का स्वागत किया और उन्हें विक्रमादित्य घड़ी भेंट की।

इफको का किसान दिवस

बिलासपुर। ग्राम नागपुरा, ब्लॉक कोटा, जिला बिलासपुर में किसान दिवस के अवसर पर इफ़को द्वारा एक विशेष कृषि जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में गाँव के सरपंच, सचिव, प्रगतिशील किसानों, महिला कृषक समूहों तथा युवाओं ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की।इसकार्यक्रम का संचालन इफको के क्षेत्रीय अधिकारी, नवीन कुमार तिवारी द्वारा किया गया। कार्यक्रम के दौरान इफ़को अधिकारी द्वारा किसानों को रबी फसल के लिए नैनो डीएपी से बीज उपचार की विधि, नैनो यूरिया तथा नैनो डीएपीके वैज्ञानिक उपयोग और लाभों के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की।

विशेषज्ञों ने बताया कि नैनो उत्पादों के उपयोग से पोषक तत्वों की उपलब्धता बढ़ती है, उत्पादन लागत कम होती है तथा फसल का विकास अधिक तीव्र और स्वस्थ होता है। इफ़को के इस कार्यक्रम ने ग्राम नागपुरा के कृषकों को वैज्ञानिक, उन्नत और लागत-कुशल खेती अपनाने हेतु प्रोत्साहित किया। किसानों ने बताया कि नैनो उत्पादों से लागत में कमी और उत्पादन बढ़ाने का मार्ग खुलता है, इसलिए ऐसे कार्यक्रम अत्यंत उपयोगी सिद्ध होते हैं।

कृषि विस्तार कार्यकर्ताओं के लिए संदर्भ ग्रंथ
वर्ष भर कृषि सेवाओं और उत्पादों के प्रचार हेतु सर्वोत्तम माध्यम
50 वर्षों से निरंतर प्रकाशित
नए आकार, नए कलेवर में
(एग्जीक्यूटिव डायरी)

कृषक जगत डायरी - 2026
बुकिंग प्रारंभ
प्रमुख आकर्षण
• कृषकों के लिए सरकारी योजनाओं की उपयोगी जानकारी।
• प्रमुख फसलों की नई किस्मों के साथ सम्पूर्ण जानकारी।
• कृषि विभाग के महत्वपूर्ण अधिकारियों के नाम, फोन नंबर ।
• कृषकों के लिए सरकारी योजनाओं की उपयोगी जानकारी ।
• कृषि इनपुट से संबंधित नए उत्पादों की जानकारी ।
• बागवानी, पशु चिकित्सा, कृषि यंत्र की संपूर्ण जानकारी ।
• पंचांग, कैलेण्डर, त्यौहारों, लोक मेलों की जानकारी ।
कृषि आदान-यंत्र निर्माताओं, विक्रेताओं, ट्रैक्टर डीलरों की नववर्ष उपहार के लिए पहली पसंद
कृषक जगत के नियमित सदस्यों के लिए उपहार*
अपना उपहार सुनिश्चित पाने के लिये संपर्क करें
* नियम व शर्तें लागू.
विज्ञापन एवं डायरी खरीदी के लिए संपर्क करें
इंदौर : सचिन बोन्द्रिया : 9826021837
इंदौर कार्या. : 9826024864
भोपाल : अजय बोन्द्रिया : 9826255861
नई दिल्ली : निमिष गंगराड़े : 7387422952
जयपुर :
रायपुर : प्रेमप्रकाश सुल्लेरे : 9826255862
ई-मेल : info@krishakjagat.org
हेल्पलाईन : 6262166222
विशेष - मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ एवं राजस्थान कृषि पर विशेष जानकारी